अप्रैल २००१ Rs. 10/

# चन्दामामा

# चन्दामामा

सम्पुट - १०४ | अप्रैल २००१ | सञ्चिका - ४


## अन्तरङ्गम्



**इस माह का विशेष**

मानव धर्म (वेताल कथा)

यक्ष पर्वत

धन से भी महान

भारत की गाथा

Printed and Published by B. Viswanatha Reddi at B.N.K Press Pvt. Ltd., Chennai-600 026 on behalf of Chandamama India Limited, No.82, Defence Officers Colony, Ekattuthangal, Chennai - 600 097. Editor: Viswam

सबसे उत्तम

# उपहार

आप अपने
दूर रहनेवाले करीबियों के लिए
सोच सकते हैं

# चन्दामामा

## उन्हें उनकी पसंद की भाषा में एक पत्रिका दें

असमिया, बंगला, अंग्रेजी, गुजराती, हिन्दी, कन्नड़, मलयालम, मराठी, उड़िया, संस्कृत, तमिल व तेलुगु

और उन्हें घर से दूर घर के
स्नेह को महसूस होने दें

शुल्क

सभी देशों में एयर मेल द्वारा बारह अकं ९०० रुपये
भारत में भूतल डाक द्वारा
बारह अंक १२० रुपये

अपनी रकम डिमांड ड्राफ्ट या मनी-ऑर्डर द्वारा
'चंदामामा इंडिया लिमिटेड' के नाम भेजें
सेवा में :

**SUBSCRIPTION DIVISION**
CHANDAMAMA INDIA LIMITED
No. 82, Defence Officers Colony,
Ekkatuthangal, Chennai - 600 097.
E-mail : subscription@chandamama.org


संपादक
**विश्वम**

**चन्दामामा**
**पत्रिका विभाग**
नं. ८२, डिफेन्स आफिसर्स
कॉलोनी,
इकाडुथंगल,
चेन्नई - ६०० ०९७.
फोन : २३४ ७३८४/
२३४ ७३९९
फैक्स : २३४ ७३८४
E-mail :
chandamama@vsnl.com


**For USA**
**Single copy $2**
**Annual subscription $20**
***Intending subscribers in the USA and Canada can mail their remittances to :***
**INDIA ABROAD**
**43 West 24th Street**
**New York, NY 10010**
**Tel: (212) 929-1727**
**Fax (212) 627-9503**
**E-Mail : mail@indiaabroad.com**

संस्थापक

चक्रपाणि, बी. नागि रेड्डी

# राष्ट्रपति के विचार

भारत के राष्ट्रपति का यह परम्परागत कार्य है कि संसद का बजट- सत्र आरम्भ होने से पूर्व वे लोक सभा एवं राज्य सभा दोनों को सम्बोधित करें। इसी परम्परा को निभाते हुए राष्ट्रपति के.आर . नारायण ने १९ फरवरी को दिए गए अपने भाषण में कश्मीर सीमा पर हो रहे पाकिस्तान के साथ युद्ध को सामयिक रूप से रमजान के महीने में बंद करने की घोषणा की। इसके अतिरिक्त इसके लिए निर्धारित अवधि को दो बार बढ़ा भी दिया। दिसम्बर के आरम्भ में जब प्रधान मंत्री अटल बिहारी बाजपेयी ने युद्ध समाप्ति की घोषणा की तो उन्हें आशा थी कि पड़ोसी देश सकारात्मक विचार के साथ आगे आयेगा और कश्मीर में शांति स्थापित करने के लिए बातचीत आरम्भ हो सकेगी। परंतु दुर्भाग्य-वश उस राज्य में अनेकों लोग मारे गये और पुलिस तथा शांति स्थापना के लिए तैनात सुरक्षा सैनिकों पर हमला किया गया। राष्ट्रपति को इस बात पर पश्चाताप हुआ कि पाकिस्तान भारत द्वारा दिए गए इतने अच्छे अवसर का लाभ न उठा सका।

उसी समय राष्ट्रपति ने यह घोषणा भी की कि देश में आने वाली किसी भी प्राकृतिक आपदा से निपटने के लिए राष्ट्रीय आपदा प्रबंधक प्राधिकरण की स्थाई रूप से स्थापना की जाएगी, जो इन सबसे निपटने का कार्य करेगी। चाहे वह बाढ़ हो, जो देश के एक भाग से दूसरे भाग में हर वर्ष तबाही मचा रही है या वह सूखा हो अथवा अकाल। गुजरात में २६ जनवरी को आए गम्भीर भूकम्भ के कारण वहाँ जान-माल दोनो को भारी नुकसान हुआ।इस घटना से प्रभावित होकर ही राष्ट्रपति ने उपर्युक्त घोषणा की।

राष्ट्रपति के भाषण के कुछ और महत्वपूर्ण अंश हमारे पाठकों को रूचिकर लगेगें, जिसमें सरकार, महत्वपूर्ण संस्थानो जैसे आई.आई.टी में शिक्षा स्थानों की वृद्धि करना, हेल्थ फॉर आल की योजना को प्रगतिमान बनाने के लिए नई पद्धति का आरम्भ करना, महिला आरक्षण बिल को स्वीकृति देना, जिससे संसद तथा विधान सभाओं में अधिक महिलाएं आ सकें। यदि यह सब कार्यान्वित हो जाता है तो, हम निश्चित रूप से यह मान सकते हैं कि बच्चों का भविष्य सुरक्षित है।

# गौरव का समय

इससे पहले कि यह अंक आप लोगों के पास पहुँचे, आप लोगों ने टी.वी. पर देखा होगा अथवा समाचार पत्रों में पढ़ ही लिया होगा कि हमारे संपादकीय सलाहकार श्री मनोजदास को राष्ट्रपति के.आर. नारायणन ने **'पद्मश्री'** सम्मान से सम्मानित किया। यह हमारे चन्दामामा परिवार और इसके हजारों पाठकों के लिए गौरव की बात है।

जब हम यह अंक छाप रहे होंगे तो हमें यह समाचार भी मिलेगा कि प्रो. मनोज दास को सृजनात्मक लेखन के लिए भारत का सबसे महत्वपूर्ण पुरस्कार **'सरस्वती सम्मान'** भी प्राप्त हुआ है।

श्री मनोजदास इस प्रकाशन के साथ गत ३० वर्षों से जुड़े हैं। उनके द्वारा लिखित भाँति-भाँति के लेख और कहानियाँ समय-समय पर उनके नामों से छपती रही हैं। चन्दामामा के ही एक अन्य प्रकाशन 'दी हेरीटेज' के वे संस्थापक-संपादक थे।

इनका जन्म १९३४ में उड़ीसा के एक सम्भ्रांत परिवार में हुआ। मनोजदास ने बहुत छोटी अवस्था में कुछ ऐसी असह्य घटनाओं का सामना किया जिसने उनमें दार्शनिक भाव भर दिए और उन्होंने प्रश्न किया- "क्या मनुष्य कभी सच्ची खुशी का अनुभव कर सकता है?" आश्चर्य नहीं कि कुछ समय में वे श्री अरबिन्दो, माँ और पांडीचेरी आश्रम से आकर्षित हुए और १९६३ में आकर वहीं बस गए। वे श्री अरबिन्दो अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान में अंग्रेज़ी के प्रवक्ता रहे।"

उड़िया और अंग्रेज़ी के सक्रिय लेखक प्रो. मनोजदास ने १९४९ में उड़िया कविताओं के एक संग्रह के साथ साहित्य के क्षेत्र में कदम रखा। उस समय वे किशोरावस्था में ही थे। भारत की अतुलनीय परम्परा के विषय पर लिखना उनकी अभिरुचि है। उन्हें बहुत सारे साहित्यिक पुरस्कार प्राप्त हुए, जिसमें १९७२ का **'साहित्य अकादमी'** पुरस्कार, १९८० का **'सरला पुरस्कार'**, और १९९४ का **'साहित्य भारती'** पुरस्कार शामिल हैं। कुछ वर्षों के लिए वे सिंगापुर सरकार के शिक्षा सलाहकार भी रहे।

१९९७ में जब न्दामामा ने अपनी स्वर्ण जयंती मनायी तो सात पुस्तकें भी प्रकाशित कीं, जिसमें छः प्रो. मनोज दास की पुस्तकें थीं।

सातवीं पुस्तक किसी और की नहीं बल्कि हमारे दूसरे सम्पादन सलाहकार और प्रसिद्ध लेखक रस्किन बॉन्ड की थी। जिन्हें १९९९ में **'पद्मश्री'** पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

इनका जन्म भी १९३४ में हुआ। इनका बचपन इंग्लैण्ड में बीता। इन्होंने बहुत छोटी आयु से ही लेखन कार्य आरम्भ किया और अनेक पुरस्कार भी प्राप्त किये। उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार, और १९९८ में बाल पुस्तकों के लिए 'हन्स क्रिश्चियन अन्डेर्सन पुरस्कार' दिया गया। वे भारतीय जीवन, पहाड़ों और नदियों के बारे में लिखने में रुचि लेते हैं। चन्दामामा गत एक वर्ष से उनकी कहानियाँ प्रकाशित कर रहा है।

**हम अपने पाठकों के साथ प्रो. मनोज दास और रस्किन बॉन्ड को उनकी महत्वपूर्ण सफलता के लिए हार्दिक बधाई देते हैं और भविष्य में उनके लेखन तथा मार्गदर्शन की कामना करते हैं। - प्रकाशक**

# बाल-विशेषांक

## नवम्बर २००१ के अंक में

### भाग लेने के लिए बच्चों को आमंत्रित किया जाता है।

**नन्हें लेखकों के लिए** — मौलिक कहानियाँ ३०० से ५०० शब्दों के बीच, एक आकर्षक शीर्षक के साथ, और पजल्स, पहेली, चुटकले हमें भेजिए। प्रविष्टियाँ इन भाषाओं में होनी चाहिए — अंग्रेजी, हिन्दी, बंगाली, उड़िया, मराठी, गुजराती, तेलुगु, कन्नड़, तमिल अथवा मलयालम। आप तीन प्रविष्टियाँ भेज सकते हैं। अगर आपकी कहानी के लिए आपका कोई मित्र चित्र बना सकते हैं तो उन्हें भी भेजो। यदि वे चित्र अच्छे हैं तो आपके मित्र को (यात्रा खर्च देकर) चेन्नई बुलाया जायेगा और पत्रिका के लिए चित्र बनवाया जायेगा।

**नन्हें कलाकारों के लिए** — तीन चित्र या पेंटिंग जो भारतीय इतिहास और पुराण में किसी प्रसिद्ध घटना पर आधारित हों, भेज सकते हैं। (जिसे लिखकर बताना आवश्यक है) जिनकी प्रविष्टियाँ हमारी आशा के अनुकूल होंगी, उन्हें किसी कहानी का चित्र बनाने के लिए चेन्नई बुलाया जायेगा।

**अंतिम तिथि : ७ जून, २००१**

**पुरस्कार :** प्रशंसनीय कार्य के लिए आकर्षक पुरस्कार दिया जायेगा।

**फोटो :** कृपया अपनी प्रविष्टि के साथ अपनी पासपोर्ट आकार की तस्वीर अवश्य भेजें।

नाम : .................................................. आयु/जन्म तिथि : ..............................

कक्षा : .............. विद्यालय : ..................................................................

घर का पता : ...........................................................................................

...........................................................................................................

.............................................................................. पिनकोड ..........................

प्रविष्टि की जानकारी

१. ........................................................................

२. ........................................................................

३. ........................................................................

मैं प्रमाणित करता हूँ/करती हूँ कि ये चित्र या/कहानी आदि मेरे पुत्र/पुत्री की मौलिक रचना है। मैं चन्दामामा के द्वारा चयनित प्रविष्टियों -पर उसके पूर्ण कापीराइट अधिकार से सहमत हूँ, जिसे वे पत्रिका, तकनीकी मीडिया और अन्य भाषाओं में भी प्रयोग करेंगे।

प्रतिभागी का हस्ताक्षर            अभिभावक का हस्ताक्षर

**(कृपया संलग्न फार्म को भरकर हमें भेज दें)**

१. क्या आप चंदामामा के शुल्क देय नियमित पाठक हैं। यदि हाँ, तो आप अन्य किस भाषा में इस पत्रिका को पढ़ना चाहते हैं?

..................................................................

२. यदि निःशुल्क पत्रिका प्राप्त करते हैं तो साधन बताइए (चिन्ह ✓ लगाइए)

समाचार पत्र देनेवाले से : ..............................

पुस्तकालय से : ..........................................

मित्रों से : ..................................................

३. कितने लोग आपकी प्रति पढ़ते हैं?

..................................................................

४. कौन सा लेख पत्रिका में आपको सबसे अच्छा लगता है? (आपकी प्राथमिकता के लिए सूची)

१. ..............................................................
२. ..............................................................
३. ..............................................................
४. ..............................................................
५. ..............................................................
६. ..............................................................

५. बताइए कि किस प्रकार के लेख का चंदामामा में आप अभाव महसूस करते हैं और किस प्रकार की सामग्री आप चंदामामा में पढ़ना चाहते हैं?

१. ..............................................................
२. ..............................................................
३. ..............................................................
४. ..............................................................

६. किस प्रकार की चित्रकारी ने आपको आकर्षित किया? (अंक की तिथि कहानी का शीर्षक)

..................................................................
..................................................................
..................................................................
..................................................................
..................................................................

७. पिछले छः अंकों में किस अंक के बाहरी पृष्ठ की चित्रकारी ने आपको आकर्षित किया। (अंक की तिथि और भाषा का नाम लिखिए)

..................................................................

८.अ. पिता का व्यवसाय : ..............................

माता का : ..............................................

आ. परिवार की मासिक आय (चिन्ह ✓ लगाइए)

रु.५,०००/- ..........................................

रु.५,००१/- - १०,०००/- ..........................

रु.१०,०००/- से अधिक ..............................

९. क्या आप टेलीविजन देखते हैं?

दूरदर्शन ..................................................

सैटलाइट चैनल ..........................................

१०. आपका टेलीविजन श्याम-श्वेत है ................

या रंगीन? ................................................

११. आप स्कूल कैसे जाते हैं?

बस से : ..................................

साईकल से : ..................................

अपनी गाड़ी से : ..................................

दुपहिए से : ..................................

चार पहिए से : ..................................

आपको स्कूल कौन छोड़ता है?

माता-पिता : ..............................

ड्राइवर : ..............................
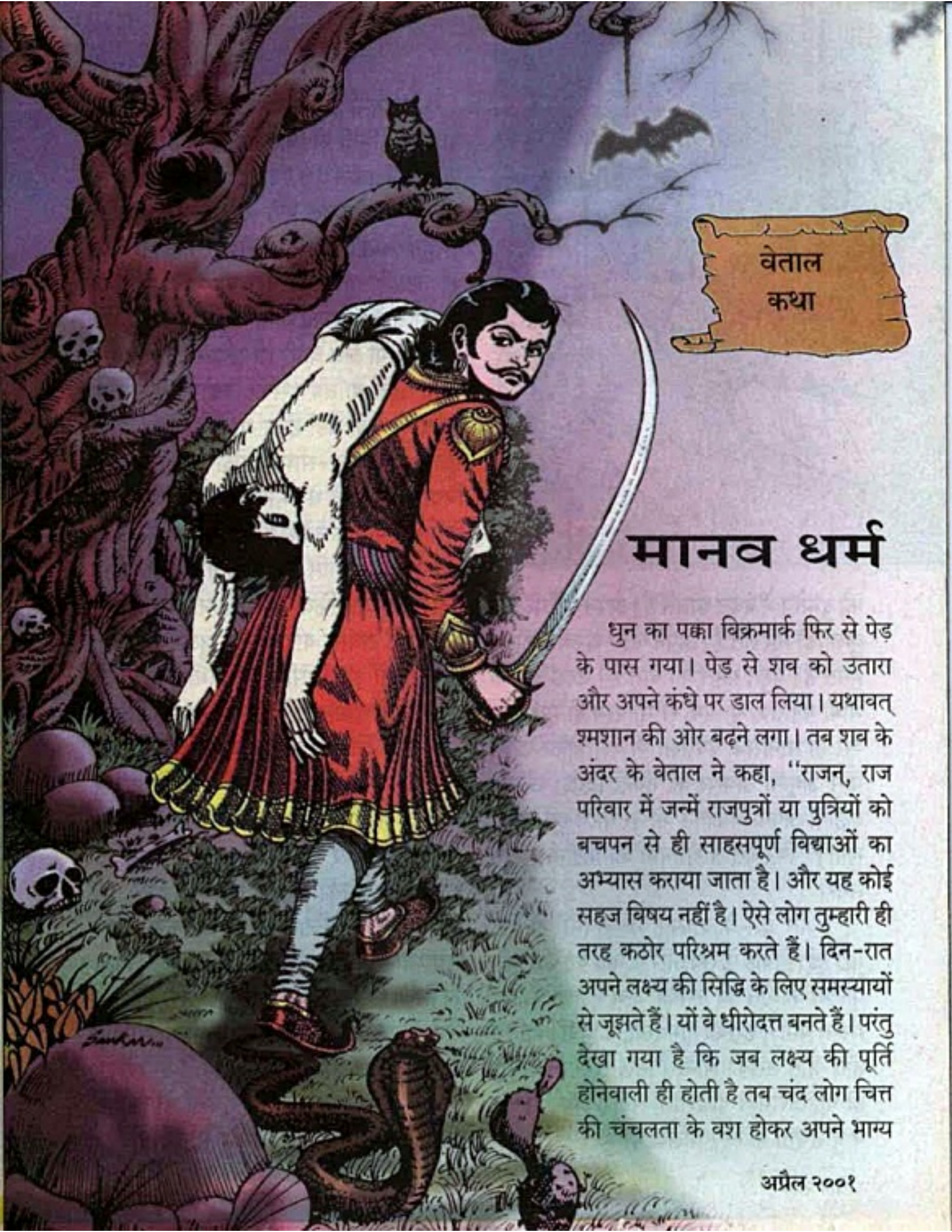
१२. क्या आप किसी और बाल-पत्रिका के ग्राहक हैं?

नाम : ......................................................

१३. क्या आप दैनिक समाचार पत्र पढ़ते हैं?

नाम : ......................................................

# मानव धर्म

धुन का पक्का बिक्रमार्क फिर से पेड़ के पास गया। पेड़ से शव को उतारा और अपने कंधे पर डाल लिया। यथावत् श्मशान की ओर बढ़ने लगा। तब शव के अंदर के बेताल ने कहा, "राजन्, राज परिवार में जन्में राजपुत्रों या पुत्रियों को बचपन से ही साहसपूर्ण विद्याओं का अभ्यास कराया जाता है। और यह कोई सहज विषय नहीं है। ऐसे लोग तुम्हारी ही तरह कठोर परिश्रम करते हैं। दिन-रात अपने लक्ष्य की सिद्धि के लिए समस्यायों से जूझते हैं। यों वे धीरोदत्त बनते हैं। परंतु देखा गया है कि जब लक्ष्य की पूर्ति होनेवाली ही होती है तब चंद लोग चित्त की चंचलता के वश होकर अपने भाग्य

को दुर्भाग्य में बदल डालते हैं। अपने पैरों पर खुद कुल्हाड़ी मार लेते हैं। अपने पतन के स्वयं कारक बनते हैं। बहुत पहले की बात है। उद्दंड देश के भावी महाराज श्रृतवर्मा से भी ऐसी ही भूल हुई। ऐसे ही मानसिक वैपरीक्षा के वश होकर उसने प्राप्त अमूल्य अवसर को ठुकरा दिया। उसकी कहानी अपनी थकावट को दूर करते हुए मुझसे सुनो।'' फिर बेताल श्रृतवर्मा की कहानी सुनाने लगा।

प्रवाल देश के शासक मरुन्तवर्मा की एक बेटी हुई। विवाह के लंबे अर्से के बाद वह पैदा हुई। पूर्णिमा की रात को उसका जन्म हुआ। इसलिए मरुन्त वर्मा ने उसका नाम रखा, कौमुदी। बालिग होते-होते उसकी सौन्दर्य निखरता गया। साथ ही वह असमान बुद्धिशाली बनी। अपने सौंदर्य व बुद्धिमत्ता के लिए प्रसिद्ध भी हुई।

मरुन्तवर्मा इस सत्य को कभी भुलाता नहीं था कि कौमुदी से जो विवाह रचायेगा, वही भविष्य में प्रवाल देश का महाराज बनेगा। उसने कौमुदी के होनेवाले पति को उसके बचपन में ही चुन लिया। वह वर मरुन्दवर्मा की सगी बहन का बेटा है, जो उद्दंड देश का भावी महाराज होनेवाला है। उसका नाम है श्रृतवर्मा।

श्रृतवर्मा जब कभी भी प्रवाल देश आता-जाता रहता था तब उसका विद्याभ्यास राजगुरु मुकुंदाचार्य के यहाँ होता था। राजगुरु के यहाँ श्रृतवर्मा के साथ-साथ कौमुदी व मणिमंत भी विद्याभ्यास करते थे। मणिमंत राजा मरुन्तवर्मा के प्रधानमंत्री रत्नकेसरी का बेटा था। बाल्य अवस्था की समाप्ति तक तीनों ने एक ही गुरु के यहाँ विद्याभ्यास किया। उस दौरान मणिमंत तथा कौमुदी में अक्सर वाद-विवाद हुआ करते थे। किन्तु दोनों अपनी सीमा को कभी नहीं लांघते थे। पारस्परिक आदर और अभिमान पर कोई आँच आने नहीं देते थे। उनकी चर्चाएँ मुकुंदाचार्य ध्यान से सुनते थे। भावगर्भित उनके विचारों से वे बहुत ही प्रभावित होते थे। श्रृतवर्मा बीच-बीच में हस्तक्षेप करता था, परंतु वाद-विवाद की प्रतिभा उसकी सीमित थी।

बाल्यकाल के समाप्त होते ही कौमुदी का विद्याभ्यास अंत:पुर में ही होने लगा। किन्तु पिता की प्रेरणा से वह पुरुष वेष धारण करके जो शस्त्र विद्याएँ बाकी दोनों सीखते थे, उसने भी सीखीं। यों उन तीनों की मैत्री बनी रही।

महाराज मरुन्तवर्मा दोनों युवकों को चाहता था। श्रृतवर्मा होनेवाला दामाद है तो मणिमंत

मेधावी है। दोनों के साथ उसकी पुत्री के बढ़ते हुए सामीप्य को देखते हुए थोड़ा-बहुत वह घबरा गया। सुंदरता व शस्त्र-विद्याओं में मणिमंत ही श्रृतवर्मा से बेहतर है। फर्क इतना ही है कि एक राजकुमार है तो दूसरा मंत्री का पुत्र मात्र है। परंतु वह भी उत्तम क्षत्रिय पुत्र है। अगर उसकी पुत्री मणिमंत्र के प्रति आकर्षित हो चुकी हो तो वह भली-भांति जानता है कि उसे कई दिक्कतों का सामना करना पड़ेगा। श्रृतवर्मा के माता-पिता का यह पक्का विश्वास है कि मरुन्तवर्मा उनके पुत्र को ही अपना दामाद बनायेगा। श्रृतवर्मा भी कौमुदी को चाहता है और उस पर मुग्ध है।

मरुन्तवर्मा को इन विषयों की व परिस्थितियों की पूरी जानकारी थी। उसे इस बात का भी भय था कि स्थिति में परिवर्तन होने पर मामला गंभीर हो जायेगा। इसे दृष्टि में रखते हुए उसने पहले अपनी पुत्री की इच्छा जाननी चाही। तत्क्षण ही इस काम में कौमुदी का साथ दिया और बातों-बातों में जान भी लिया कि वह श्रृतवर्मा को चाहती नहीं है, बल्कि एक निकट रिश्तेदार होने के नाते उसका आदर मात्र करती है। वह मणिमंत को ही अपना पति बनने के योग्य समझती है और उसके दिल में उसके लिए प्यार भी भरा हुआ है। कौमुदी से संबंधित इन रहस्यों को महाराज से बताने के बाद मालती ने यह भी कहा कि उसमें मातृदेश के प्रति अगाढ़ आदर की भावना भी है।

मालती की बातों से यह भी स्पष्ट हो गया कि कौमुदी किसी पराये देश के राजा की रानी बनकर जाना नहीं चाहती। उसका मानना है कि अगर मणिमंत से विवाह हो जाए तो अपने ही देश में रहकर दोनों मिलकर राज्य-भार संभाल सकते हैं। ऐसा न होने पर प्रवाल देश किसी राज प्रतिनिधि को सौंपना होगा, क्योंकि इस राजवंश का कोई वारिस नहीं रहा। अब महाराज को लगा कि जिस बात का उन्हें भय था, वही होनेवाला है। एक क्षण भर के लिए वह स्तंभित रह गया। उसका शरीर दहल उठा। उस क्षण से लेकर कौमुदी के विवाह के विषय में उसकी चिंता बढ़ती ही रही।

किन्तु तत्संबंधी विषय में एक रहस्य है, जिससे महाराज अपरिचित हैं। वह यह नहीं जानता कि श्रृतवर्मा ने भी कौमुदी के मन की इच्छा जान ली। वह बचपन से कौमुदी को अपनी पत्नी मानता आया। कौमुदी और मणिमंत के पारस्परिक आदर एवं प्रेम ने उसे निराश कर

योग्यता को उपयोग में लाना नहीं चाहता। इसलिए अच्छा यही होगा कि हम दोनों युद्ध विद्याओं द्वारा अपने बल की परीक्षा कर लें और इस समस्या का निपटारा कर लें। विजेता को कौमुदी और प्रवाल देश का सिंहासन भी प्राप्त होंगे''। फिर राजा ने श्रुतवर्मा से कहा, ''मणिमंत अवश्य ही इस प्रस्ताव को स्वीकार करेगा। तुम अपनी समस्त शक्तियों का उपयोग करके कौमुदी को अपनाओ। अगर तुम्हारी विजय असंभव लगे और परिस्थिति तुम्हारे विरुद्ध हो जाए तो मैं कोई ऐसा प्रबल उपाय सोचूँगा और ऐसा रास्ता निकालूँगा, जिससे तुम्हारी विजय हो। अपनी जीत के बाद मणिमंत और तुम्हारे बीच में जो बातें हुईं, कौमुदी को बता देना। तब कौमुदी भी चुपचाप तुम्हें अपने पति के रूप में स्वीकार करेगी।''

दिया। उसे लगा मानों उस पर कुठाराघात हुआ है। उसने इस विषय को लेकर खूब सोचा-विचारा और अपने मामा से सारी बातें बतायीं, जिन्हें वह जानता है।

महाराज कुछ दिनों तक सोच में पड़ा रहा। एक दिन अपने भानजे को बुलाकर उससे कहा, ''श्रुतवर्मा, कौमुदी के विवाह के विषय में मैंने खूब सोचा-विचारा। अब एक निर्णय पर आ गया हूँ। कल ही तुम मणिमंत से मिलना और उससे स्पष्ट कह देना कि तुम उसके और कौमुदी के मन की बात जान गये।'' उससे यह भी कहना, ''मणिमंत, कौमुदी को तुम जितना चाहते हो, उससे अधिक ही उसे मैं चाहता हूँ। उसका पति बनने की हमारी समान योग्यताओं के न होते हुए भी मेरी एक और अतिरिक्त योग्यता है और वह है हमारी रिश्तेदारी। फिर भी मैं इस

मामा की बातों को लेकर श्रुतवर्मा ने थोड़ी देर तक सोचने के बाद कहा, ''मामाजी, सच तो यह है कि हम दोनों समान योद्धा हैं, परंतु मणिमंत में सहज ही अत्यधिक आत्म विश्वास है, जो उसके धैर्य-साहस को दुगुना करता है। अतः हम एक काम करेंगे।

अरावली पर्वत प्रांत में कृष्णचंद्र नामक एक गुरु ने गुरुकुल की स्थापना की, जिसके बारे में आपने सुना ही होगा। भावी महाराजाओं के लिए वे अस्त्र-शस्त्र विद्याओं में विशेष प्रशिक्षण देते हैं। कल ही वहाँ जाऊँगा और उनका शिष्य बनकर और सामर्थ्य पाऊँगा। आगे तक, आपने जैसे कहा, करेंगे।''

महाराज ने श्रुतवर्मा की बातें मान लीं।
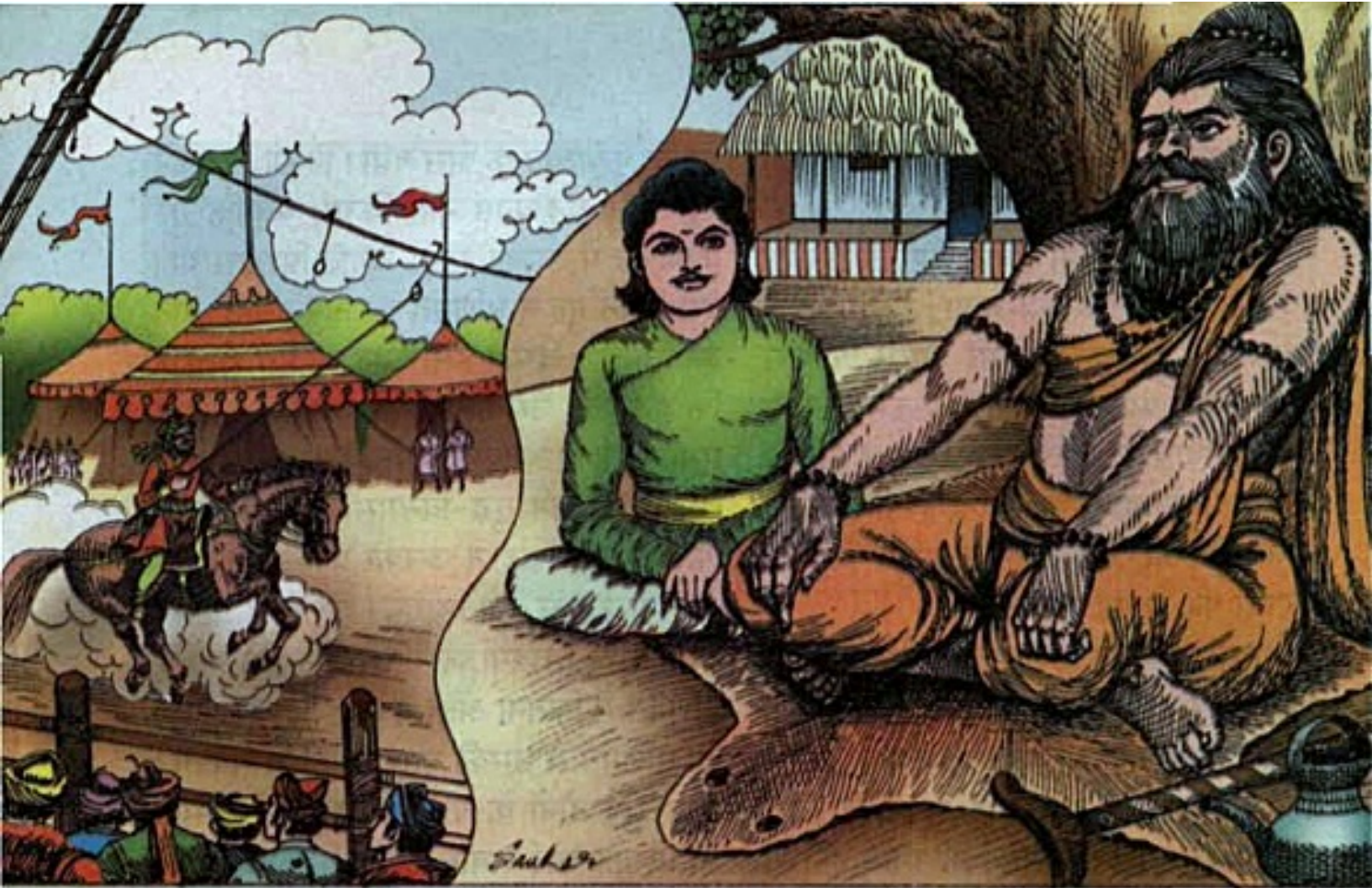
दूसरे दिन श्रृतवर्मा, कृष्णचंद्र के पास गया और छः महीनों तक एकाग्रता से युद्ध-विद्याएँ सीखीं। प्रशिक्षण पूरा हो जाने के बाद कृष्णचंद्र ने श्रृतवर्मा से पूछा, ''तुमने कहा था कि प्रवाल के महाराज तुम्हारे मामा हैं। उस देश के प्रधानमंत्री के पुत्र मणिमंत से क्या तुम्हारा परिचय है?''

गुरु के इस प्रश्न से चकित श्रृतवर्मा ने कहा, ''मणिमंत ! हाँ, मैं उसे अच्छी तरह से जानता हूँ। क्या मैं जान सकता हूँ, यह प्रश्न आपने क्यों किया?''

कृष्णचंद्र ने मुस्कुराते हुए कहा, ''मेरी एक आदत है। बहुरूपिया बनकर देश में मैं घूमा करता हूँ। इससे यह कोई जान नहीं पाता कि मैं कौन हूँ। तुम्हारे यहाँ आने के पंद्रह दिनों के पहले प्रवाल देश में बसंतोत्सव मनाया गया। उस समय मैं वहाँ उपस्थित था। वहाँ मैंने मणिमंत के साहस भरे अपूर्व विन्यास देखे। अचंचल आत्म विश्वास से मणिदीप की तरह प्रकाशमान होनेवाले योद्धा ही ऐसे विन्यास करने की क्षमता रखते हैं। ये औरों से संभव नहीं हो पाते। वे हृदय मैं कभी भुला नहीं सकता। मणिमंत से कहना कि मैं उसे यहाँ आमंत्रित कर रहा हूँ। अवश्य ही वह मेरे आश्रम में आये।''

गुरु की बातें सुनकर श्रृतवर्मा थोड़ी देर तक अवाक् रह गया। आखिर अपने को संभालते हुए उसने कहा, ''उस दिन जो युद्ध-विन्यास हुए थे, उनमें मैंने भी भाग लिया।''

श्रृतवर्मा की बातों पर कृष्णचंद्र ने आश्चर्य

प्रकट करते हुए कहा, "सच ! तुम भी वहाँ थे?" फिर मुस्कुरा पड़ा।

दूसरे दिन श्रुतवर्मा प्रवाल देश लौटा और अपने मामा से मिलकर कहा, "मामाजी ! कृष्णचंद्र के शिष्यत्व से मेरे आत्म विश्वास एवं सामर्थ्य में पर्याप्त वृद्धि हुई। किन्तु मुझे लगता है कि रिश्तेदारी की अतिरिक्त योग्यता के आधार पर कौमुदी की इच्छा के विरुद्ध व्यवहार करना न्यायोचित नहीं। मेरी बात मानिये और कौमुदी-मणिमंत का विवाह कर दीजिए"।

बेताल ने यह कहानी सुनाने के बाद कहा, "राजन ! मैं तुमसे पहले ही कह चुका हूँ कि श्रुतवर्मा ने छः महीनों तक प्रशिक्षण पाया, कठोर परिश्रम किया, पर सब कुछ अपने ही हाथों बरबाद कर लिया। उसे लक्ष्य की प्राप्ति होने ही वाली थी, चित्त चपलता के वश होकर आत्म विश्वास के अभाव में अपने भाग्य को ठोकर मार दिया। ऐसा अविवेकी क्या कहीं देखने को मिलेगा? मेरे इन संदेहों के समाधान जानते हुए भी मौन रह जाओगे तो तुम्हारे सिर के टुकड़े-टुकड़े हो जायेंगे"।

विक्रमार्क ने कहा, "श्रुतवर्मा स्वयं शिष्य बनकर कृष्णचंद्र के पास गया। किसी के कहने पर उसने यह काम नहीं किया, क्योंकि गुरु कृष्णचंद्र में उसका इतना अगाढ विश्वास था। ऐसे महान गुरु ने मणिमंत को अपने यहाँ आने का निमंत्रण दिया। इससे यह साबित होता है कि कृष्णचंद्र उसके युद्ध-विन्यासों से कितना प्रभावित हुए। श्रुतवर्मा ने यद्यपि स्वयं कह दिया कि मैंने भी उन युद्ध-विन्यासों में भाग लिया, फिर भी कृष्णचंद्र ने उसकी प्रशंसा नहीं की और मुस्कुराकर चुप रह गये। कृष्णचंद्र के इस व्यवहार से श्रुतवर्मा जान गया कि उसमें और मणिमंत में कितना अंतर है। यह भी जान गया कि मणिमंत से उसकी बराबरी नहीं हो सकती। अगर युद्ध दोनों के बीच में हो भी तो उसके जीतने का कोई सवाल ही नहीं उठता। इसी कारण इस निर्णय पर आया कि वह कौमुदी के योग्य वर नहीं है। यह चित्त चंचलता है ही नहीं। यह राजनीति और मानवधर्म का सही अर्थों में पालन करना है।"

राजा के मौन भंग में सफल बेताल शव सहित गायब हो गया और फिर से पेड़ पर जा बैठा।

**आधार - लक्ष्मी गायत्री की रचना**

# यक्ष पर्वत

## 4

(खड्गजीवदन्त ने मांत्रिक एवं जटाओंवाली भूतनी का पीछा किया, परंतु गुफ़ा में वे कहीं भी दिखायी नहीं पड़े। तब वे दोनों एक सुरंग से होते हुए गये और एक ऐसी जगह पर पहुँचे, जहाँ शिथिल भवनों का समूह था। उस भवन में रहनेवाली पुजारिनी ने मांत्रिक को आज्ञा दी कि खड्ग और जीवदन्त को तुरंत पकड़ लिया जाए। तलवार लिये जटाओंवाली भूतनी को अपने साथ लेकर मांत्रिक निकल पड़ा।) अब आगे -

सामने के शिथिल भवनों को बिना पलक झपकाए जीवदन्त देखता जा रहा था। वह अपने ही आप सोचने लगा कि ये भवन कितने पुराने होंगे, किस कारण से ये जन-शून्य हो गये और इस स्थिति में कैसे पहुँच गये। परंतु खड्गवर्मा तो मांत्रिक और जटाओंवाली भूतनी के बारे में चिंतित था। जितनी जल्दी हो सके, उन्हें मारकर वहाँ से निकल जाना चाहता था।

इतने में उन दोनों ने सुना कि उनके नज़दीक की ईंटों की दीवार से कोई मज़बूत चीज़ टकरा गयी। वह ध्वनि सुनते ही खड्गवर्मा तुरंत उठ खड़ा हुआ और बोला, ''जीव, यह कैसी ध्वनि है? कहीं हम पर हमला करने की साजिश तो नहीं हो रही है? हमें बहुत चौकन्ना रहना है''।

दोनों उस दीवार के पास पहुँचे और उसकी दूसरी तरफ़ देखने ही वाले थे, कि इतने में मांत्रिक दीवार पर खड़े होकर ऊँचे स्वर में कहने लगा, ''नराधमों, अभी इसी क्षण महाभूत के पैरों पर तुम दोनों की बलि चढ़ाऊँगा।'', कहते हुए उसने जीवदन्त के गले को निशाना बनाकर तलवार फेंकी।

खड्गवर्मा ने मांत्रिक की तलवार से अपने को बचाते हुए कहा, ''अरे मूर्ख मांत्रिक! हमें
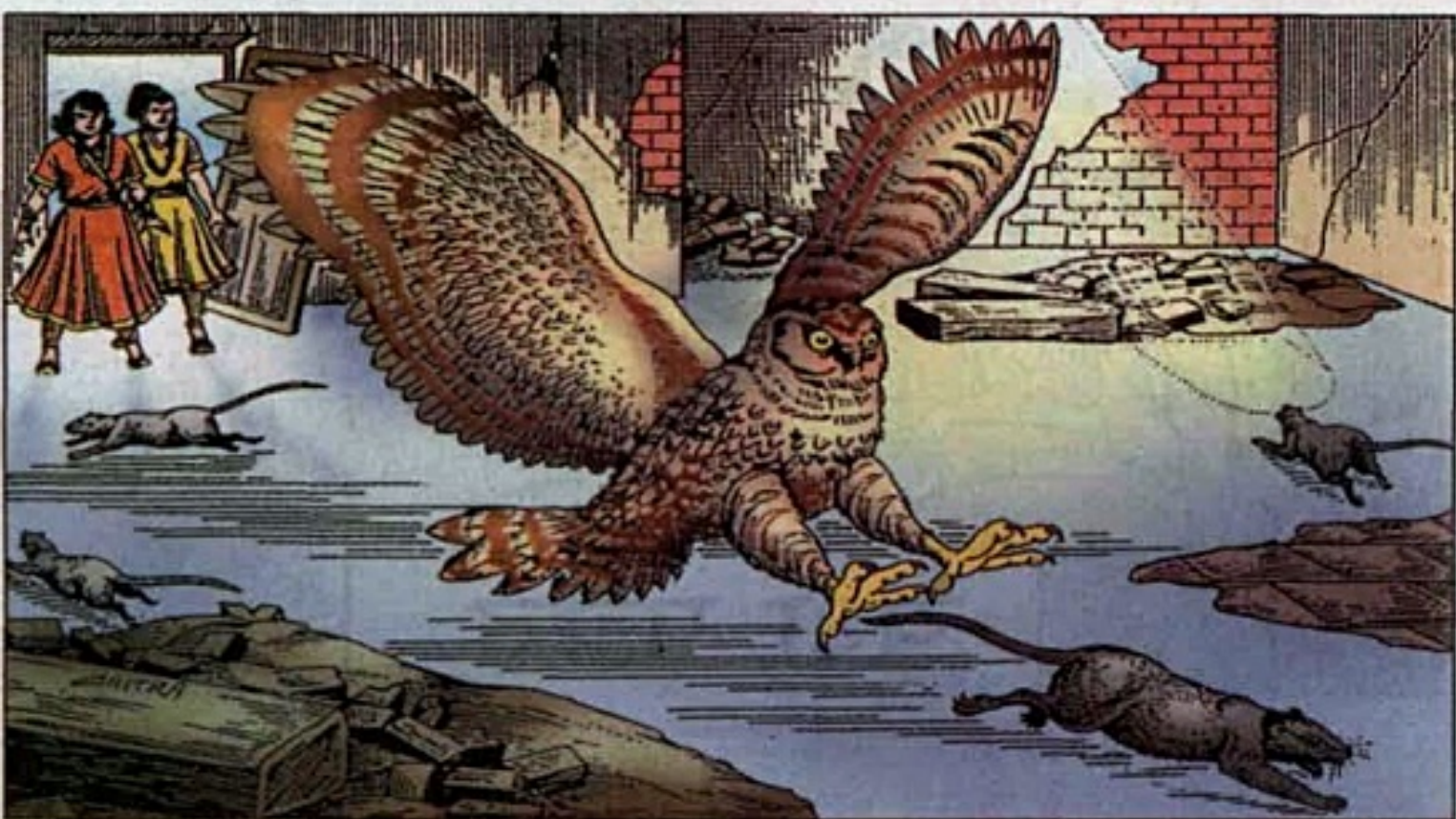
चेतावनी देकर तूने अपनी जान को ख़तरे में डाल लिया'', कहते हुए उसने उसका हाथ पकड़ लिया और ज़ोर से खींचा। मांत्रिक दीवार से नीचे गिर गया।

इतने में ''बलि, बलि, बलि'' कहती हुई जटाओंवाली भूतनी दीवार पर आकर खड़ी हो गयी। उसे मालूम नहीं था कि उसके गुरु पर क्या बीता। आवेश और उत्साह से भरी वह छलांग मारकर दीवार पर खड़ी हो गयी।

दीवार पर चढ़ने के बाद भूतनी ने देखा कि उसका गुरु ज़मीन पर बेसुध पड़ा हुआ है तो वह चिल्ला पड़ी। इतने में जीवदन्त ने उसका पैर पकड़कर खींचा और उसके गिरते समय उसकी कमर पर ज़ोर से लात मारी और कहा, ''खड्ग, अब और यहाँ रहना हमारे लिए श्रेयस्कर नहीं है। लगता है, यह सारा प्रदेश मांत्रिकों से भरा हुआ है। सामने दिखायी देनेवाले किसी भवन में हम चले जाएँ और उनके आक्रमण से अपने को सुरक्षित कर लें।''

फिर वे दोनों तुरंत उन भवनों की ओर दौड़ते हुए गये। वे एक कमरे के द्वार के सामने खड़े हो गये और इर्द-गिर्द देखने लगे। वे देख रहे थे कि दुश्मन के कहाँ से आने की संभावना है। परंतु उन्हें कोई दिखायी नहीं पड़ा। बस, उन्हें मांत्रिक व जटावाली भूतनी की कराह मात्र सुनायी पड़ रही थी।

दोनों चुपचाप चलते हुए एक कमरे में पहुँचे। वहाँ उन्होंने देखा कि चार-पाँच घुड़स इधर-उधर भाग रहे हैं। गिद्ध के आकार का एक चमगीदड़ बाण की तरह से आया और घुडसों में से एक को लेकर खिड़की से बाहर

उड़ गया। वे दोनों कमरे के द्वार की तरफ़ बढ़े। इतने में अचानक उनपर हमला हुआ। पीछे से किसी ने उनके सिरों पर लाठी चलायी और उन्हें घायल किया। वे दोनों बेहोश होकर ज़मीन पर धड़ाम से गिर पड़े। पुजारिनी के सेवक अब आये और उनके सिरों की परीक्षा करने लगे। उन्हें विश्वास हो गया कि वे मरे नहीं हैं, जीवित ही हैं।

''अच्छा हुआ, ये ज़िन्दा हैं। अगर ये मर जाते तो महाशक्ति पुजारिनी के क्रोध का हम शिकार हो जाते। हमें वे मार डालती।'' एक सेवक ने लंबी सांस खींचते हुए कहा।

''वे कहीं मर न जाएँ, इसीलिए तो हमने लाठी पर नरम कपड़ा बांध दिया। अब इनके हाथ-पैर बांध दो और इन्हें कंधे पर डाल लो। चलो, इन्हें पुजारिनी के पास ले चलते हैं।'' एक और सेवक ने कहा।

उन्होंने खड्ग और जीवदन्त को अपने कंधों पर डाल लिया। और उन्हें पुजारिनी के पास ले गये।

तब पुजारिनी मंडप के बीच में सुसज्जित एक उच्च आसन पर विराजमान थी। उसने खड्ग और जीवदन्त को तिरछी नज़र से एक बार देखा और आँखें लाल करती हुई बोली, ''अरे, इनमें से एक मांत्रिक लगता है।''

''हो सकता है महाशक्ति पुजारिनी। उसके हाथ में मंत्रदंड भी था, दूसरे के हाथ में लंबी पैनीदार तलवार थी'' एक सेवक ने कहा।

''वे अब कहाँ हैं? कहीं फेंककर चले आये?'' पुजारिनी ने पूछा। ''जहाँ ये बेहोश

गिरे थे, वहीं उन्हें छोड़कर आ गये।'' सेवक ने कहा।

''मूर्खों, तुरंत जाओ और उन्हें यहाँ ले आओ!'' पुजारिनी ने आज्ञा दी। दोनों सेवक दौड़ते हुए गये और तलवार व मंत्रदंड ले आये। पुजारिनी ने बड़े ही ध्यान से उनका परीक्षण करने के बाद कहा, ''लगता है, इन दोनों में कोई विशिष्ट शक्तियाँ नहीं हैं। ये बिल्कुल ही साधारण लगते हैं। इन्हें कमरे में बंद करो और इन दोनों चीज़ों को उन्हीं की बग़ल में डाल दो। फिर देखें कि आगे-आगे क्या होता है!''

सेवकों ने पुजारिनी की आज्ञा का पालन किया। पंद्रह मिनिटों के बाद खड्गजीवदन्त होश में आये। तब जीवदन्त ने खड्गवर्मा से कहा, ''खड्ग, हमें पुजारिनी ने सजीव छोड़

दिया। इसमें अवश्य ही उसकी कोई चाल होगी। इसके पीछे अवश्य ही कोई कुतंत्र होगा।'' इतने में उन्हें कमरे के बाहर से सिंह का गर्जन सुनायी पड़ा। खड्गवर्मा तुरंत उठ खड़ा हुआ और बोला, ''ये निगोड़े हमपर सिंह का प्रयोग करना चाहते हैं। हमें सिंह के हाथों मार डालना चाहते हैं'', कहता हुआ वह हँस पड़ा।

''यह भी एक तरह से अच्छा ही हुआ। हम उस सिंह का प्रयोग उन्हीं पर करेंगे और इन शिथिल भवनों के वातावरण को भयानक बना देंगे।'' कहते हुए जीवदन्त ने अपना मंत्रदंड दीवार पर ज़ोर से दे मारा। दीवार का एक भाग टूटकर गिर गया। बग़ल के कमरे में खड़ा सिंह घबरा गया और दीवार से सटकर खड़ा हो गया।

''सिंहराज, तुम्हें छुटकारा भी मिलेगा और पर्याप्त आहार भी'', कहता हुआ जीवदन्त, खड्गवर्मा के साथ कमरे के बाहर आ गया।

दूसरे ही क्षण पुजारिनी के दस-पंद्रह सेवक ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लग गये, ''क़ैदी भागने की कोशिश में हैं। उन्हें पकड़ो''। यों चिल्लाते हुए वे उन दोनों के सामने आ गये। बड़ी ही फुर्ती से जीवदन्त सिंह के पास आया और मंत्रदंड दिखाते हुए सेवकों की तरफ़ बढ़ने के लिए उसे उकसाया। वह गरजता हुआ उनपर टूट पड़ा। क्षण भर में उनमें से चार पाँच सेवक बहुत घायल हो गये और ज़मीन पर गिर गये। एक सेवक को सिंह ने अपने मुँह में दबोच लिया। वह छटपटा रहा था। बाक़ी छः-सात सेवक दीवार को फांदकर अपने प्राणों को हथेली में लिये दुम दबाकर भाग गये। वे भय के मारे कांप रहे थे।

जीवदन्त ने अपना मंत्रदंड सिंह की ओर करते हुए कहा, ''सिंहराज, पास ही भवन के नीचे जाने के लिए सीढ़ियाँ हैं। इसी मार्ग से निकल जाओ और इन शिथिल भवनों से होते हुए अरण्य पहुँचो''। कहते हुए वह उसे सीढ़ियों की तरफ़ ले जाने आगे आया। फिर उसे मंत्रदंड से मारा।

सिंह गरजता हुआ जीवदन्त की ओर लपका। उसने पैर उठाये और पीछे के पैरों पर खड़े होकर जीवदन्त पर टूट पड़ने ही वाला था, उसने उसकी पेट के नीचे मंत्रदंड रख दिया और उसे दूर फेंका। सिंह ज़मीन पर लुढ़कता हुआ सीढ़ियोंवाले कमरे से बाहर आकर खड़ा हो गया।

पुजारिनी के सेवक टूटी दीवार पर खडे यह दृश्य देख रहे थे। सिंह से भी भिड़ने की जीवदन्त के साहस व शक्ति को देखकर वे स्तंभित रह गये। वे आँखें फाड़-फाड़कर देखते ही रह गये। उनमें से एक ने दोनों हाथ जोड़कर नमस्कार करते हुए जीवदन्त से कहा, ''महामांत्रिक शिरोमणि, विनयपूर्वक प्रणाम, आपकी मंत्रशक्ति अद्भुत है। यह साधारण मनुष्य के बस की बात नहीं है। अपनी इस अद्भुत शक्ति से आप क्यों न पुजारिनी का अंत कर दें और क्यों न इस शिथिल नगर के सम्राट बन जाएँ। तब हम सब आपके शिष्य बन जाएँगे और अपने जीवन चरितार्थ करेंगे।''

पास ही खड़े और सेवक यह कहते हुए उसपर टूट पड़े कि यह गुरुद्रोह है। वे आपस में एक-दूसरे से लड़ने-झगड़ने लगे। उस दरमियान दो सेवक दीवार पर से फिसलकर नीचे गिर गये। सीढ़ियों से उतरता हुआ सिंह धीरे-धीरे गरजता हुआ उनकी तरफ़ बढ़ने लगा।

मंत्रदंड को ऊपर उठाकर सिंह को धमकी देता हुआ जीवदन्त बोला, ''अब चुपचाप तुम यहाँ से चले जाओ। सीढ़ियों से होते हुए उतरकर अपना रास्ता नापो। पुजारिनी के शिष्यों के आपसी झगड़ों में फंसकर तुम अपना अहित मत करो। जाओ, चले जाओ यहाँ से।''

सिंह जीवदन्त के कहे अनुसार सीढ़ियों से उतरता हुआ चला गया। खड्गवर्मा चुपचाप यह सब कुछ देख रहा था। अब उसने कहा, ''जीव, अब भला हम यहाँ क्यों रहें? पुजारिनी के शिष्य एक-दूसरे की चोरी पकड़कर लड़-झगड़ रहे हैं। मरने-मिटने पर तैयार हैं। अब यहाँ हमें रोकनेवाला कोई नहीं है। इन शिथिल भवनों को छोड़कर अरण्य में चले जाएँगे।''

''हाँ, हाँ, ऐसा ही करेंगे। जिस मार्ग से सिंह गया है, हम भी उसी मार्ग से अरण्य जाएँगे। परंतु हमें अब देखना है कि जिस द्वार से यहाँ आये हैं, वहाँ हम पहुँच पायेंगे या नहीं।'', कहते हुए जीवदन्त निकल पड़ा। पुजारिनी को एक शिष्य के द्वारा मालूम हो गया कि जीवदन्त और खड्ग अब आज़ाद हो गये हैं, सिंह ने उसके कुछ शिष्यों को घायल कर दिया है और शिष्य आपस में लड़-झगड़ रहे हैं।

थरथर कांपते हुए बोला, ''महाशक्ति पुजारिनी, वे दोनों मानव महान बलशाली, साहसी और उत्तम कोटि के मांत्रिक लगते हैं। उन्होंने हमारे मांत्रिक तथा जटाओंवाली भूतनी को...''

शिष्य ने पूरी बात ख़तम भी नहीं की, पुजारिनी ने आवेश में आकर एक शिष्य की पीठ में भाला चुभोया और कहा, ''कायर, चुप हो जा!

अब एक भी शब्द मुंह से मत निकाल। मैं उन्हें अभी पकड़ लूँगी और महाभूत पर बलि चढ़ाऊँगी।'' दांत पीसती हुई वह बोली। अब शिष्यों के सामने कोई चारा नहीं रह गया। वे मांत्रिक और जटाओंवाली भूतनी के क़दम में क़दम मिलाते हुए, भयभीत होते हुए बढ़ने लगे।

यह समाचार सुनते ही पुजारिनी ने अपना शूल ऊपर उठाते हुए क्रोध-भरे स्वर में कहा, ''महाभूत, यह क्या हो रहा है? अपने मंत्रबल से हराकर उन दोनों को कमरे में बंद कर दिया। दो अधम मानवों ने मुझपर हमला बोल दिया। मेरे शिष्यों को घायल किया और मुझ जैसी शक्तिशालिनी को चुनौती देने पर तुल गये। मेरा अपमान करने की जुर्रत की। उनका इतना साहस ! अब मुझसे यह सहा नहीं जायेगा। उनका अंत ही अब मेरा लक्ष्य है। ऐ अधम, डरपोक शिष्यों, जाओ, उन दो मानव कीड़ों को पकड़कर ले आओ।''

खड्ग, जीवदन्त ने सिंह को, मांत्रिक को, जटाओंवाली भूतनी को पग-पग पर पछाड़ा। उनकी दुर्गति कर दी। वहाँ खड़े शिष्यों में से एक ने यह देख लिया था। इसलिए वह भय से

इस बीच, खड्गजीवदन्त शिथिल भवनों के एक और स्थल पर पहुँचे और अरण्य में पहुँचने का मार्ग ढूँढ़ने लगे। जिस सुरंग मार्ग से वे आये थे, वे उसका पता न पा सके।

''जीव, लगता है, पुजारिनी के लोगों से हम बहुत दूर निकल आये। सिंह का क्या हुआ? वह क्या अरण्य पहुँच गया होगा?'' खड्गवर्मा ने पूछा।

''वह भी हमारी ही तरह कहीं फंस गया होगा। बीच-बीच में क्या उसकी गरज तुम्हें सुनायी दे नहीं रही है?'' कहते हुए जीवदन्त ने शिथिल भवन के एक कक्ष में क़दम रखते हुए कहा, ''देखा, इन दुष्टों ने मुसाफ़िरों को लूटकर कितना माल यहाँ छिपाया? देखो, अनाज के कितने बोरे यहाँ पड़े हैं।''

वहाँ अनाज के बोरे, ढेर के ढेर थे। सिलाई के फट जाने से उनमें से कुछ बोरों में से धान, गेहूँ, ज्वार ज़मीन पर गिर रहे थे।

खड्गवर्मा ने आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा, ''जटोंवाली भूतनी के द्वारा ये लोगों को भयभीत करते हैं और इतना सब कुछ इकट्ठा करते रहते हैं।''

''इस धान का एक दाना भी पुजारिनी और उसके शिष्यों को न पहुँचे, ऐसा कोई उपाय हमें ढूँढ़ना है। भूख के मारे तब जीने के लिए वे इन शिथिल भवनों से बाहर आयेंगे। तब तो उनकी हालत बड़ी ही दयनीय होगी।'', जीवदन्त ने उपाय सोचते हुए कहा।

''आश्चर्य की बात है कि हम दोनों को एक ही तरह का उपाय सूझा'', कहते हुए खड्गवर्मा ने अपने पहनावे में से एक चकमक पत्थर निकाला और रूई जलायी। फिर जलती हुई उस रूई को अनाज के बोरों पर फेंक दिया।

अनाज के बोरे जलने लगे। धीरे-धीरे आग व्याप्त होती गयी। बोरे एक-एक करके जलने लगे। तब उन्हें उस कमरे के बग़ल के कमरे से आवाज सुनायी देने लगी।

''खड्ग, इस कमरे के दरवाजे बंद हैं। अंदर से कोई चिल्ला रहा है'', कहते हुए जीवदन्त उस कमरे के पास आया और दरवाज़ों को खोलने की कोशिश में लग गया।

खड्गवर्मा ने भी उसके पास आकर हंसते हुए कहा, ''प्राण की रक्षा करने की जल्दबाजी में तुमने यह भी नहीं देखा कि दरवाज़े पर इतना बड़ा ताला लगा हुआ है। अपने मंत्रदंड से पहले यह ताला तोड़ो।''

जीवदन्त ने तुरंत अपने मंत्रदंड से वह ताला तोड़ा। खड्गवर्मा ने फिर दरवाजे को पीछे ढकेला।

कमरे में कोई ख़ास अंधेरा नहीं था। ऊपर की खिड़की से थोड़ी रोशनी आ रही थी। उस रोशनी में उन्होंने देखा कि एक बूढ़ा आदमी जंजीरों से जकड़ा हुआ है। वह आजानबाहु है, पर बहुत ही कमज़ोर लग रहा है। उसकी लंबी सफ़ेद दाढ़ी हवा में झूल रही है।

**(क्रमशः)**
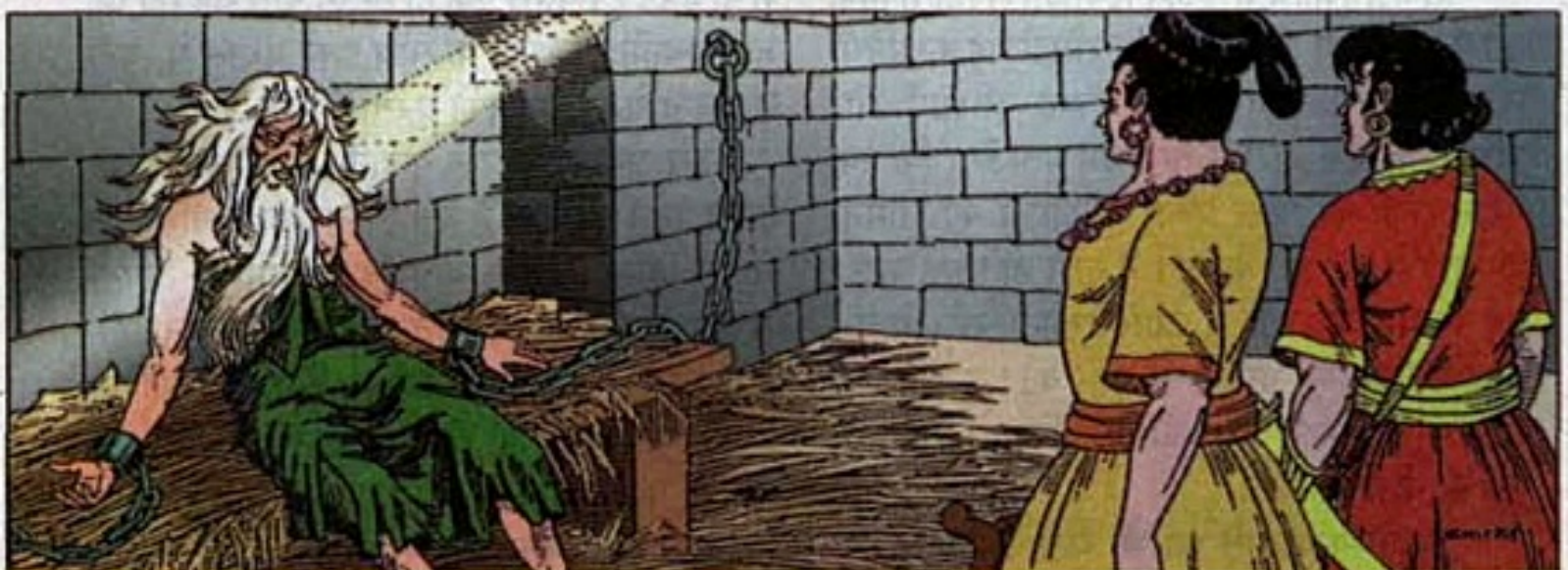
एक महान सभ्यता की झांकियाँ
युग-युग में सत्य के लिए इसकी गौरवमयी खोज

# १५. वचन निभाना

दादाजी ने जो कहानियाँ सुनाई थीं, उसमें से संदीप और चमेली के मित्र बहुत-सी कहानियाँ नहीं सुन पाये थे। जब दूसरे बच्चे प्रो. देवनाथ को कहानियाँ सुनाने के लिए कहने लगे तो उन्होंने अपने पोते-पोती को वह सब सुनाने के लिए कहा जो कुछ उन्होंने सीखा था। इसके साथ ही उन्होंने यह वादा भी किया कि यदि वे अपने काम ठीक से करेंगे तो प्रो. देवनाथ और कहानियाँ सुनाते रहेंगे।

दोनों परीक्षार्थियों ने अपनी परीक्षा सफलतापूर्वक पूरी की। चेमली और संदीप ने, सीखी गई कहानियाँ को ठीक से प्रस्तुत किया। "यह परीक्षाएँ और परीक्षाएँ ही हैं। आज मैं तुम्हें यह बताऊँगा कि एक महान राजा को किस प्रकार परीक्षाओं का सामना करना पड़ा।", प्रो. देवनाथ ने खुश होते हुए कहा। यह रविवार था और वे अपनी छोटी-सी श्रोता-मण्डली को लेकर बगीचे की ओर बढ़े। उन्होंने एक साफ-सुथरा स्थान चुना और एक विशाल पीपल के वृक्ष के नीचे बैठे गए।

"पुराने कथाकारों का भी यही स्थान था।", प्रो. देवनाथ ने कहा। "और आज हम भूत और भविष्य के समय अंतराल में एक संबंध बनाएँगे। उन महान चरित्रों को याद करेंगे, जिन्होंने काफी समय पहले कुछ उदाहरण प्रस्तुत किये, जिसकी सच्चाई आज भी उतनी ही महत्वपूर्ण है, जितनी उनके समय में थी। जैसा कि तुम लोग त्रिशंकु महाराज के बारे में जानते हो। अब मैं उनके पुत्र हरिश्चन्द्र के बारे में बताता हूँ। लेकिन विश्वामित्र ही दोनों राजाओं के बीच रहे हैं। परन्तु एक ही अलग बात यह रही कि जो विश्वामित्र त्रिशंकु के साथ इतने दयालु थे, वही हरिश्चन्द्र के साथ काफी क्रूरता से पेश आए।"

इस प्रकार प्रोफेसर कहानी सुनाने लगे। यह उससे पहले की बात है जब विश्वामित्र ने वशिष्ठ के बारे में जाना। इसेक बावजूद विश्वामित्र अपनी मेहनत से प्राप्त की हुई शक्ति के बाद भी अपनी एक कमजोरी पर विजय नहीं पा सके, जो था मुनि वशिष्ठ के प्रति शत्रुता। यही राजा हरिश्चन्द्र के जीवन के कष्ट का कारण बना।

एक बार देवताओं तथा महात्माओं के दरबार

# गाथा

में मुनि वशिष्ठ को विश्वामित्र से अधिक सम्मान मिला। इसके तुरंत बाद विश्वामित्र को पता चला कि अयोध्या के राजा हरिश्चन्द्र ने अपने कुल गुरु वशिष्ठ द्वारा एक बहुत बड़ा यज्ञ सम्पूर्ण करवाया है। यह यज्ञ राजसू के नाम से जाना जाता था। यह यज्ञ वही राजा करा सकता है जो सदा सत्य पर अटल रहे और अपने बचन को न भुलाए। इस यज्ञ की सफलता का फल इसे करवानेवाले तथा इसका मार्ग सुझाने वाले को बराबर से जाता है।

"क्या हरिश्चन्द्र महान और इतने सत्यवादी थे," विश्वामित्र को आश्चर्य हुआ और उन्होंने उनकी कठिन परीक्षा लेने का निर्णय किया।

उनको स्वयं को यह नहीं मालूम था कि राजा की परीक्षा कैसे ली जाए। जैसे ही राजा एक परीक्षा उत्तीर्ण करते, विश्वामित्र उनके सामने एक दूसरी समस्या खड़ी कर देते।

यह इसी प्रकार आरम्भ हुआ। ऋषि ने एक राक्षस को अपनी शक्ति से एक सूअर बना दिया और उसे राज्य के सुन्दर बगीचे को नष्ट करने की आज्ञा दी। उस सूअर ने वैसा ही किया। वह बड़ा ही शक्तिशाली था कि राजा के सैनिक न उसे पकड़ सके और न ही डराकर भाग सके। राजा को इसकी खबर मिली। वे एक घोड़े पर बैठकर सूअर का पीछा करने लगे। यह सिर्फ थोड़ी दूर दौड़कर फिर अचानक राजा के ऊपर झपट पड़ता था। उसके बाद वह कभी छिप जाता और कभी राजा के पीछे आ जाता।

राजा को आश्चर्य हुआ परन्तु वे उसका पीछा करना नहीं छोड़े। बार-बार उसका पीछा करते-करते वे एक भीषण जंगल में पहुँच गए और फिर वे सूअर कहीं खो गया।

राजा को थकान महसूस हुई, नदी का जल पीकर उन्होंने अपनी प्यास बुझाई और एक पत्थर पर सोकर विश्राम करने लगे। इतने में वहाँ एक बूढ़ा ब्राह्मण आया औरं बड़े प्यार से बातें करने लगा। राजा इस बात से बड़े प्रसन्न हुए कि वे उस जंगल में किसी सज्जन व्यक्ति से मिले। राजा ने ब्राह्मण को अपना परिचय दिया और उससे पूछा कि उसे क्या चाहिए। ब्राह्मण ने कहा कि उसका बेटा विवाह योग्य है और उसका जीवन सुखी बनाने के लिए आवश्यक धन चाहिए।

राजा ने ब्राह्मण की आवश्यकता को पूरा करने के लिए दूसरे दिन महल में बुलाया। उन्होंने वचन दिया कि वह जो भी माँगेगा मिलेगा।

वह ब्राह्मण कोई और नहीं विश्वामित्र ही थे। जिन्होंने वेश बदल रखा था। जैसा कि राजा ने कहा था ब्राह्मण दूसरे दिन उनसे मिला और पूरा राज्य तथा महल माँग लिया। उन्होंने यह सोचा था कि

राजा काफी भयभीत हो जाएगा और अपने वचन से मुकर जाएगा। लेकिन राजा के चेहरे पर शिकन तक न आयी। वे खड़े हुए और ब्राह्मण को विश्वास दिलाया कि उसकी माँग पूरी की जायेगी।

लेकिन विश्वामित्र राजा को उस स्थान पर ले गए जहाँ वे उन्हें परीक्षा में असफल तो नहीं कर सकते थे, परन्तु उन्होंने किया।

"मेरे प्रिय राजा यह बहुत अच्छा है कि आपने अपना वचन निभाया। परन्तु सभी पुण्य कार्यों के बाद दक्षिणा देना आवश्यक है। ब्राह्मण के अनुसार दक्षिणा अतिरिक्त रूप से देनी थी। जैसा कि राजा ने अपना सब कुछ पहले ही दान कर दिया था, इसलिए ब्राह्मण की दक्षिणा रूपी माँग को पूरा नहीं कर सकते थे। उन्होंने यह कहकर ब्राह्मण से विदा ली कि जितना जल्दी हो सके वे इस कार्य को पूरा करेंगे। इसके बाद वे रानी तारामती और पुत्र रोहिताश्व के साथ बाराणसी के लिए रवाना हो गए।

बनारस में उन्हें बड़ी मुश्किल से एक झोपड़ी में आश्रय मिला था कि ब्राह्मण पुनः आया और अपनी दक्षिणा की माँग की। उसने बड़े गुस्से में कहा कि यदि वे शीघ्र यह दक्षिणा नहीं देते तो वह उन्हें श्राप दे देगा। रानी तारामती आगे आयीं और कहा कि मुझे एक दासी की भाँति बेच दीजिए और उससे जो पैसा मिले उसे ब्राह्मण को दे दीजिए। ऐसा ही किया गया। लेकिन जिस व्यक्ति ने रानी को दासी के रूप में खरीदा, वह भी कोई और नहीं बल्कि विश्वामित्र ही दूसरे वेश में थे। उन्होंने राजकुमार रोहित को भी खरीद लिया।

इसके पश्चात भी विश्वामित्र को दक्षिणा रूपी दिया जानेवाला धन पूरा नहीं पड़ा। रानी और राजकुमार से अलग होकर राजा गलियों बाजारों में यह चिल्लाते हुए घूमने लगे कि उन्हें कोई दास (नौकर) के रूप में खरीद ले।

एक व्यक्ति जो पवित्र गंगा के किनारे दाहसंस्कार की ज़मीन का मालिक था, उसने राजा को खरीद लिया। राजा ने इसके बाद जो धन दिया, उससे विश्वामित्र का कर्ज पूरा हो गया।

इसके बाद राजा हरिश्चन्द्र का कार्य था कि वे उस स्थान की देखभाल करें और शवों को जलाने का प्रबंध करें। लेकिन उन्हें उन सभी लोगों से शुल्क लेना होता जो वहाँ आकर दाहसंस्कार करते हैं। वह शुल्क उनको मालिक के पास जमा भी करना होता। इसी प्रकार दिन गुजरते गए। तारामती जो घर के कार्यों के लिए दासी बनाई गयीं थी, उनके साथ बहुत बुरा व्यवहार किया जाता था। लेकिन जिस कारण उन्होंने यह त्याग किया था, वह उनके पति का वचन निभाने में सफल रहा। इसलिए रानी को इसकी ग्लानि नहीं थी।

लेकिन एक सुबह उन्हें बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ा जब रोहित साँप के काटने से मर गये और तारामती को अपने पुत्र के शव को देखने की भी आज्ञा न मिली। उनसे कहा गया कि सारा कार्य

समाप्त करने के बाद ही वे रात को अपने पुत्र का शव देख सकती हैं।

अन्तत: उन्होंने रात को अपने पुत्र को देखा जो साँप के काटने से विष के कारण नीला पड़ गया था। उन्होंने शव को उठाया और अकेली ही श्मशान की ओर चल पड़ीं।

यह अंधेरी रात थी, बारिश हो रही थी। बड़ी कठिनाई से वह बिजली चमकने पर अपना रास्ता पा सकीं और किसी तरह श्मशान पहुँची। सभी मुर्दों के लिए जो शुल्क निर्धारित किया गया था, वह उन्हें चुकाने के लिए कहा गया। और कौन था जो उनसे यह माँग कर रहा था? उनका पति राजा हरिश्चन्द्र!

जब रानी ने अपनी असमर्थता बताकर करुणा-दया की भीख माँगी, तो भी वह व्यक्ति अपनी ज़िद पर अड़ा रहा। दोनों ने एक दूसरे को आवाज के कारण पहचान लिया। वे लोग अपने पुत्र की मृत्यु पर विलाप करने लगे। बाद में उन्होंने यह निर्णय लिया कि वे अपने पुत्र की चिता के साथ स्वयं जलकर अपने जीवन का अंत कर लेंगे। चिता तैयार कर ली गयी। रोहिताश्व के मृत शरीर को उसके ऊपर रख दिया गया। उसे जला भी दिया गया। ज्यों ही राजा और रानी चिता में कूदने को हुए, त्यों ही प्रकाश के साथ एक गर्जना हुई।

एक क्षण के लिए वे भौचक्के रह गए। उन्होंने देखा कि उनका प्रिय पुत्र उनके सामने जीवित खड़ा है और मुस्कुरा रहा है। यही नहीं जिस व्यक्ति ने रानी को खरीदा था, वह अपने असली रूप, विश्वामित्र के रूप में प्रकट हुआ। उनके सम्मान में सभी देवता, श्मशान का मालिक (कोई और नहीं बल्कि 'धर्म' थे) मिलकर राजा हरिश्चन्द्र की महानता का गुणगान करने लगे।

एक बार फिर विश्वामित्र को यह एहसास हुआ कि वशिष्ठ बिल्कुल सही थे, जिन्होंने राजा हरिश्चन्द्र का समर्थन किया। उन्होंने राजा की महानता को स्वीकार किया और उनका सारा राज्य पुनः उन्हें वापस देने के लिए अयोध्या की ओर चल पड़े।

दादाजी ने कहा, "मेरे बच्चों यह कथा हमें सिखाती है कि सत्य पर अटल रहने के लिए मनुष्य में महान त्याग और धर्म होना आवश्यक है। सैकड़ों वर्षों तक स्त्री-पुरुषों के हृदय में राजा हरिश्चन्द्र की कहानी घूमती रही। वे राजा और रानी के साथ विलाप करते रहे, लेकिन यह भी महसूस किया कि आदमी प्रत्येक दुःख और कठिनाई के बाद पवित्र और शक्तिशाली बनता जाता है।

# इस माह जिनकी जयंती है

स्वाती तिरुनाल

सुप्रसिद्ध गायिका एम.एस. सुब्बुलक्ष्मी द्वारा गायी गई 'भावयामी रघुरामन' की मधुर पंक्तियाँ आज भी लोगों को आनंदित करती हैं। परन्तु बहुत समय पूर्व उसे संगीत बद्ध किया गया था। इसका संगीत किसने दिया?

यही नहीं बल्कि अनेक गीत, महान संगीतकार महाराज स्वाती तिरुनाल द्वारा संगीत-बद्ध किये गये।

स्वाती तिरुनाल का जन्म १६ अप्रैल १८१३ को ट्रैवेंकोर के राजवाड़ा परिवार में हुआ, जो अब केरल का भाग है। कहा गया है कि राज्य का कोई उत्तराधिकारी न होने के कारण महाराजा काफी दुःखी रहते थे। इसीलिए जब उनकी बहन गर्भवती हुईं तो उन्होंने यह घोषणा कर दी कि उसका होनेवाला बच्चा ही महाराजा बनेगा। इस प्रकार तिरुनाल का जन्म हुआ। जैसा कि उनके जन्म से पूर्व ही उन्हें राजा घोषित कर दिया गया था, इसलिए वे गर्भाश्रीमन के नाम से प्रसिद्ध हुए। उनका नाम रामबर्मा रखा गया और पारिवारिक नाम कुलशेखर। स्वाती नक्षत्र में पैदा होने के कारण उन्हें स्वाती तिरुनाल के नाम से ही प्रसिद्धि मिली।

२१ अप्रैल १८२९ को जब वे १७ वर्ष के थे तो उन्हें महाराज का मुकुट पहनाया गया। उन्होंने एक बुद्धिमान और सक्षम प्रशासक का परिचय दिया। उन्होंने भारत की प्रथम जन पुस्तकालय, मुन्सिफ दरबार और नक्षत्र शोधशाला की स्थापना की। उन्होंने ही पहली बार आय सर्वेक्षण और जन गणना आरम्भ किया। उन्होंने ऐलोपैथिक औषधियों के प्रयोग और स्कूल में अंग्रेज़ी के पढ़ने को भी बढ़ावा दिया। इससे भी अधिक वे संगीत, साहित्य, कला और दर्शन में भी विलक्षण थे। उनका प्रशासन काल केरल में संगीत का स्वर्ण युग कहा जाता है।

उनके इस कला और संगीत-प्रेम ने उन्हें कई कठिनाईयों में उलझा दिया। जनरल कलेन जो उस राज्य का ब्रिटिश संचालक था उसने, स्वाती द्वारा कला और संगीत के लिए किए जानेवाले खर्चे देने से मना कर दिया। जनरल राज्य के प्रशासन में दखल देने लगा। स्वाती जब तक उसे इन सबसे अलग रख सकते थे रखा। परन्तु बाद में वे राज्य-काज का काम छोड़कर धर्म और संगीत में लीन हो गए। २५ दिसम्बर १८४६ को उनका देहान्त हो गया।

स्वाती तिरुनाल ने संस्कृत, मलयालम, तेलुगू तथा हिन्दुस्तानी और कन्नड़ में लगभग ४०० गीतों को संगीतबद्ध किया। इनके अधिक गीत भक्ति पूर्ण है।

इतने कम जीवन-काल में इस राजवाड़े संगीतकार का भारतीय संगीत को दिया गया योगदान अतुलनात्मक है। इनका मधुर संगीत लगातार संगीत-प्रेमी पीढ़ी को आनंदित कर रहा है।

# २०वीं शताब्दी में भारत

## ४. सशक्त गणतंत्र का आरम्भ (१९७७-२०००)

१९७५ में आपतकाल की घोषणा कर दी गई थी, जिसका असर १९७७ के संसद के चुनावों पर पड़ा। ३० सालों से बिना किसी बाधा के राज्य कर रही कांग्रेस पार्टी का तख्ता पलट गया और सर्वदलीय जैसे कांग्रेस(ओ), भारतीय लोकदल, जन संघ और समाजवादी पार्टी ने एक साथ मिलकर जनता पार्टी का निर्माण किया और मोरारजी देसाई इसके अध्यक्ष चुने गए। इस प्रकार सत्ता में जनता पार्टी पहली बार अपना अधिकार स्थापित कर पायी।

मोरारजी देसाई

पूर्व मंत्री जगजीवन राम ने कांग्रेस को त्यागपत्र देकर अलग एक गणतंत्र कांग्रेस की स्थापना की, जिसका शीघ्र ही जनता पार्टी के साथ समझौता हो गया। १६ फरवरी तथा १० मार्च को जो चुनाव हुए उनमें जनता पार्टी और इसके समर्थकों को बहुमत मिला। इंदिरा गाँधी अपनी रायबरेली की सीट भी खो बैठीं। २१ मार्च को आपतकाल हटा लिया गया। २४ मार्च को मोरारजी देसाई ने नए प्रधानमंत्री के रूप में कार्य-भार सम्भाला। कांग्रेस विरोधी दल अन्य दस राज्यों में और दो केन्द्र शासित प्रदेशों में भी सफल रहे।

२१ जून को एन. सन्जीवा रेड्डी भारत के छठे राष्ट्रपति बने। कार्यकारी समिति से इंदिरा गाँधी को त्यागपत्र देने की माँग करते हुए अनेक नए कांग्रेसी नेता पार्टी छोड़ने लगे। १९७८ में अकांग्रेसी पार्टियों ने त्रिपुरा, अरुनाचल प्रदेश, मेघालय और महाराष्ट्र में भी शक्ति स्थापित कर ली।

संजीव रेड्डी

# प्रथम मिली-जुली सरकार

११ जुलाई १९७८ को विपक्ष ने मोरारजी देसाई के मंत्रिमण्डल के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव पारित किया। उन्होंने १५ जुलाई को त्यागपत्र दे दिया। कार्यकारी प्रधान मंत्री चरन सिंह ने जनता पार्टी को छोड़ दिया और वे संसद में जनता दल (धर्मनिर्पेक्ष) के नेता चुने गए। २८ जुलाई को उन्होंने भारत की प्रथम मिली-जुली सरकार की स्थापना की। इसका समय बहुत कम था और २० अगस्त को चरन सिंह ने त्यागपत्र दे दिया। राष्ट्रपति ने लोकसभा भंग कर दी।

चरण सिंह

२ से ६ जनवरी के बीच हुए १९८० के चुनावों में इंदिरा गाँधी एक बार फिर पूर्ण बहुमत के साथ सत्ता में आ गयीं। ५२४ सीटों में से कांग्रेस (आई) ने ३५३ सीटों पर विजय पायी। १४ जनवरी को इंदिरा गाँधी ने प्रधानमंत्री का कार्य-भार सम्भाला।

कांग्रेस (आई) फिर से अरुनाचल प्रदेश, गोआ, कर्नाटक और हिमाचल प्रदेश में स्थापित हो गयी। इसके अतिरिक्त अन्य पार्टियों के साथ मिलकर पाँडीचेरी, हरियाणा, मणीपुर, और नागालैण्ड में मंत्रीमंडल स्थापित करने की बात चलने लगी। मई में हुए चुनाओं का परिणाम कांग्रेस आई के हक में रहा और उसने दोतिहाई बहुमत गुजरात, राजस्थान, मध्यप्रदेश, उड़ीसा और उत्तर प्रदेश और सामान्य बहुमत महाराष्ट्र एवं पंजाब में प्राप्त किया।

इंदिरा गाँधी

उसी समय ६ अप्रैल को भारतीय जनता पार्टी का आगमन हुआ। अटल बिहारी वाजपेयी इसके अध्यक्ष चुने गए।

भारत ने एक महान सफलता तब प्राप्त की जब एस.जेड. कासिम के संचालन में एक २१ सदस्यीय वैज्ञानिक दल अन्टार्कटिका की साहसिक यात्रा पर गया और ९ जनवरी १९८२ को इस बर्फीले महाद्वीप पर पाँव रखा। यहाँ पर एक माह तक रहते हुए ही दल ने प्रथम शोध केन्द्र स्थापित किया जिसे 'दक्षिण गंगोत्री' के नाम से जाना गया।

जैल सिंह

२५ जुलाई १९८२ में सरदार जैल सिंह भारत के सातवें राष्ट्रपति बने। शेख अब्दुल्ला की मृत्यु के बाद जो १९७७ के बाद पुनः

फारूक अब्दुल्ला

जम्मू-कश्मीर के मुख्यमंत्री बने थे, उनके पुत्र फारूक अब्दुल्ला को सितम्बर १९६२ में मुख्यमंत्री बनाया गया।

पंजाब में समस्या तब खड़ी हो गयी जब अकाली दल ने ३ अप्रैल १९८३ को यातायात को भंग करते हुए 'रास्ता रोको' आन्दोलन आरम्भ किया। दल ने यह भी घोषणा की कि लाखों की संख्या की सशक्त सेना इस लड़ाई को जारी रखेगी।

एक जरनैल सिंह भिण्ड्रानवाला नामक आतंकवादी ने दो सम्प्रदायों के बीच में झगड़ा करा दिया। अमृत शहर के स्वर्णमंदिर में उसने शरण ले लिया।

केन्द्र द्वारा बात-चीत किए जाने का प्रस्ताव, अकाली दल के अध्यक्ष हरचरन सिंह लांगोवालान ने ठुकरा दिया।

◆ १९७७ में मेहर मूस अन्टार्कटिक जाने वाली प्रथम भारतीय महिला बन गयीं।

# विश्व में और कहाँ...

❖ ब्रिटेन के कंजरवेटिव पार्टी सत्ता में तब आयी जब ४ मई १९७९ को मार्ग्रेट थेचर ने लेबर पार्टी पर ४३ सीटों से विजय प्राप्त की। वे यूरोप में पहली महिला प्रधानमंत्री बनी।

मार्ग्रेट थेचर

❖ अफगानिस्तान में लगातार सोवियत सेनाओं के बने रहने के कारण यू.एस.ए. के नेतृत्व में लगभग ६० देशों ने मास्को के १९८० में होनेवाले ओलम्पिक खेलों में अपना विरोध प्रदर्शन किया। भारत ने २१ जुलाई को हॉकी में ओलम्पिक स्वर्ण पदक पुनः प्राप्त कर लिया।

● विश्व स्वास्थ्य संघ ने मई १९७७ को "हेल्थ फॉर ऑल २००० तक" की घोषणा की।

# सबसे कम आयु के प्रधानमंत्री

वर्ष १९८३ में अनेक राजनीतिक पार्टियों का गठन हुआ। ८ अक्टूबर को लोक-दल एवं भारतीय जनता पार्टी ने मिलकर राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन की स्थापना की। अटल बिहारी बाजपेयी को अध्यक्ष चुना गया। सितम्बर में संघ मोर्चा भी जनता पार्टी, कांग्रेस (आई), जनतांत्रिक समाजवादी पार्टी और राष्ट्रीय कांग्रेस के साथ हो गया।

राजीव गाँधी

पंजाब की राजनीति वर्ष १९८४ के पहले दिन से ही तेज हो गयी। केन्द्र ने भिड्रानवालन तथा अन्य आतंकवादियों को, जो स्वर्ण मंदिर में छिपे बैठे थे, उन्हें आत्म समर्पण करने के लिए कहा। अखिल भारतीय सिख विद्यार्थी संघ पर प्रतिबंध लगा दिया गया। मई में अकाली दल ने स्वर्ण मंदिर के चारों ओर घेरा डाले हुई सेना को हटाने की मांग की। उन्होंने एक अलग खालिस्तान बनाने को भी मांग की। सेना ने 'ब्ल्यू स्टार ऑपरेशन' आरम्भ कर दिया। दोनों ओर की गोली-बारी में भिंड्रानवालान तथा विद्यार्थी संघ के अध्यक्ष अमरीक सिंह की मृत्यु हो गयी। सिखों के खिलाफ की गयी कार्यवाही ने देश में समस्या पैदा कर दी। ३१ अक्टूबर को प्रधानमंत्री इंदिरा गाँधी को उनके निवास स्थान पर उनके दो सिख सुरक्षा सिपाहियों ने गोली मारकर हत्या कर दी। कांग्रेस के महासचिव राजीव गाँधी को प्रधानमंत्री की शपथ दिखाईअ गयी।

अगले दो दिनों तक दिल्ली तथा अन्य स्थानों पर सिख विरोधी दंगे होते रहे। मात्र दिल्ली में ही २००० से अधिक सिख मारे गए।

दिसम्बर में असम तथा पंजाब को छोड़कर सभी प्रांतों में लोकसभा चुनाव हुए। ५.०४ सीटों में ४०१ कांग्रेस के पक्ष में गयीं। यह लोकसभा चुनावों में बहुमत का एक उच्चमान था।

३१ दिसम्बर को राजीव गाँधी प्रधानमंत्री चुने गए। उस समय वे केवल ४० वर्ष के थे।

भारत ने एक सफलता तब हासिल की जब भारतीय वायु सेना के स्काडेन लीडर

राकेश शर्मा ४ अप्रैल १९८४ को सोवियत सेना के साथ सोयुज T-11 में अंतरिक्ष में गए। वे एक सप्ताह बाद वापस आए। यह भारत के प्रथम और विश्व के १३८वें व्यक्ति बने जिन्होंने अंतरिक्ष का अनुभव प्राप्त किया।

राकेश शर्मा

- ७ जून १९७९ को भारत ने भास्कर-१ का लोकार्पण किया। जो पूरे तरीके से स्वदेशी ग्रह था। जो सोवियत रूस के अंतरिक्ष विज्ञान से बना।

प्रकाश पादुकोने

- भारत के प्रकाश पादुकोने विश्व बेंडमिन्टन चैम्पियन बने (लंदन १९७९)।
- २ मार्च १९८२ को गंगा नदी पर बना महात्मा गाँधी पुल का उद्घाटन किया गया। ५.५७५ कि.मी. लम्बा यह पुल, विश्व का सबसे लम्बा पुल है।

# विश्व में और कहाँ...

- अंतरिक्ष शास्त्र में एक मील का पत्थर तब स्थापित हुआ जब यू.एस.ए. ने पहले अंतरिक्ष यान कोलम्बिया को छोड़ा। वह एक रॉकेट की पीठ पर बैठकर ऊपर गया और ऐसे उड़ा जैसे हवाई जहाज और ग्लाईडर की भाँति वह पृथ्वी पर वापस आ गया। (१९८१)
- २३ मार्च १९८३ में अमेरिका के राष्ट्रपति रोनाल्ड रेगन ने राष्ट्रीय स्तर पर

रोनाल्ड रेगन

आकाशवाणी से 'स्पर वार' कार्यक्रम की घोषणा की। इसका उद्देश्य देश भर में अणु बम के आक्रमण से सतर्क करना था। यह कार्यक्रम अणु बम के विस्तार को घटाने की घोषणा करते हैं।

# पंजाब समस्या का हल

भोपाल गैस कांड ऐसी दुर्घटना थी जिसे पूरा विश्व भूल नहीं पायेगा। ३ दिसम्बर १९८४ को आधीरात में जहरीली गैस एक कीटनाशक दवाई बनाने वाली फैक्टरी से रिसनी आरम्भ हो गयी। मध्यप्रदेश की राजधानी शीघ्र ही गैस चैम्बर में तबदील हो गई। ३,००० से अधिक लोग मारे गए। हजारों लोग बेघर हो गए। जिन्हें अस्पताल ले जाया गया वे जीवन भर के लिए अपाहिज हो गए।

'ब्ल्यू स्टार ऑपरेशन' के बाद, जिसे सिख लोगों ने अच्छा नहीं माना था, सरकार सुलह करने की कोशिश करने लगी। २४ जुलाई १९८५ में संत लोंगोवाल और प्रधानमंत्री राजीव गाँधी ने एक ऐतिहासिक पंजाब शांति प्रस्ताव पर हस्ताक्षर किया। लोंगोवाल सिख की दो जातियों तथा सरकार के बीच में बिचौलियों का कार्य कर रही थे। उन्होंने अपने को सिखों के साथ मिला लिया। संगरूर के नजदीक एक सभा को संबोधित करते हुए २० अगस्त के उनकी हत्या कर दी गई। जिसमें खालिस्तान की मांग करनेवाले किसी आतंकवादी का हाथ था।

सितम्बर में चुनाव हुए। अकाली संघ ने चुनावों का बहिष्कार करने के लिए आमंत्रित किया, परन्तु एक दृढ़ जनसमूह ने चुनाव में हिस्सा लेने का निर्णय ले लिया। अकाली दल को ७३ सीटें और कांग्रेस को ३२१। सुरजीत सिंह बर्नाला को मुख्यमंत्री बनाया गया।

भारत में संसद तथा विधानसभा सदस्यों द्वारा की जानेवाली त्रुटियों से बचने के लिए १९८५ में त्रुटि-विरोधी कानून पारित किया। भारतीय गणतंत्र में यह ऐतिहासिक कानून ३० जनवरी १९८५ से लागू किया गया। भारत के आठवें राष्ट्रपति आर. वेंकटरामन ने २५ जुलाई १९८६ में राष्ट्रपति पद की शपथ ली।

आर. वेंकटरामन

२० फरवरी १९८७ को केन्द्रशासित अरुणाचल प्रदेश और मिजोरम को पूर्ण रूप से राज्य का रूप प्रदान किया गया।

३० मई को गोआ भारत संघ का २५वाँ राज्य बनाया गया। पुर्तगालियों के अधीन रहा दमन और दिव का विलय करके केन्द्र की सत्ता स्थापित की गई।

श्रीलंका में नीति सम्बन्धी झगड़ों के चलते प्रधानमंत्री राजीव गाँधी ने कोलोम्बो जाकर श्रीलंका के राष्ट्रपति जयवर्धने के साथ २९ जुलाई १९८७ को समझौता पत्र पर हस्ताक्षर किया। इस समझौते में यह निर्णय लिया गया कि भारत

श्रीलंका में एक शांति सेना भेजेगा और उत्तरी पूर्वी क्षेत्र जहाँ पर तमिल बहुसंख्यक हैं, वहाँ चुनाव भारत की देख-रेख में होगा। उसी समय तमिल स्वतंत्रता संघ से निकलकर वी. प्रभाकरन ने 'लिबरेशन टाईगर्स ऑफ तमिल ईलम' की स्थापना की।

टाईगर्स ने अपने को श्रीलंका की सेना के साथ युद्ध करने के लिए संगठित कर लिया। भारतीय शांति सेना २ वर्षों तक श्रीलंका में ही रही।

- मदर टेरेसा को १७ अक्टूबर १९७९ को नोबल शांति पुरस्कार प्रदान किया गया। मदर टेरेसा ने १९५० में कलकत्ता में 'मिशनरीज ऑफ चैरिटी' की स्थापना की थी। उनको भारत के उच्चतम पदक 'भारत रत्न' से जनवरी १९८० को सम्मानित किया गया।

मदर टेरेसा

# विश्व में और कहाँ...

- वर्ष १९८५ में राष्ट्रपति मिखाईल गोर्बाचिव ने सोवियत ढाँचे की प्रगति के लिए कुछ कानून पारित किए। जिससे एक ग्लैस्टोन या खुला प्रस्ताव और दूसरा पेरिस्टोइका या पुनः निर्माण था। ये दोनों सीमित स्वतंत्र बाजार और अकेंद्रित के

मिखाईल गोर्बाचिव

परिणामस्वरूप सामने आये। उन्होंने यू.एस. के राष्ट्रपति रेनाल्ड रेगन के साथ हथियार की दौड़ पर उचित प्रतिबँध लगाने के बारे में भी विचार-विमर्श किया।

- काम्पैक्ट डिस्क (सी.डी.) पहली बार १९८७ में जर्मनी में आरम्भ हुई।

# सरकारें आयीं और गयीं

नवम्बर १९८९ में हुए नवीं लोकसभा के चुनावों में किसी भी पार्टी को बहुमत नहीं मिला। कांग्रेस आई को मात्र १९३ सीटें मिलीं। जनता दल के १४१ भारतीय जनता पार्टी को ८८, और सी.पी.एम. को ३२ सीटें मिलीं। नवम्बर २९ को राजीव गाँधी ने अपना त्याग पत्र दे दिया।

बी.पी. सिंह

राष्ट्रीय मोर्चे ने सरकार बनाने का दावा किया। एक दिसम्बर को संसद की जनता दल की पार्टियाँ और राष्ट्रीय मोर्चे ने बी.पी. सिंह को अपना नेता चुना। सी.पी.एम.,सी.पी.आई., आर.एस.पी., फॉर्वड ब्लॉक और भाजपा ने बाहर से ही अपना समर्थन दिया। २ दिसम्बर को बी.पी. सिंह ने प्रधानमंत्री पद की शपथ ली।

सरकार ने अपने प्रथम कार्य के रूप में मंडल आयोग को हाथ में लिया और सरकारी नौकरियों में उन लोगों को २७ प्रतिशत आरक्षण देने का प्रस्ताव पारित किया जो सामाजिक, और शिक्षा के रूप से पिछड़े हुए हैं। इसके विरोध में प्रदर्शन होने लगे। कॉलेज और स्कूल विद्यार्थी सड़कों पर उतर आये। सरकार ने अगस्त १९९० में सारे शिक्षा संस्थानों को एक महीने के लिए बंद कर दिया। जो दंगे सिर्फ दिल्ली में आरम्भ हुए थे, शीघ्र ही पूरे देश में फैल गए।

चन्द्रशेखर

१५ नवम्बर को ७० संसद सदस्य चन्द्रशेखर को नेता चुनकर अलग हो गए। उसी समय भाजपा ने सरकार से समर्थन वापस ले लिया। कांग्रेस (आई) के सांसदों ने चन्द्रशेखर को समर्थन दिया। लोकसभा में बहुमत खो देने के बाद बी.पी. सिंह ने त्याग पत्र दे दिया। १० नवम्बर को चन्द्रशेखर ने भारत के आठवें प्रधानमंत्री के रूप में शपथ ली।

चन्द्रशेखर सरकार भी बहुत कम समय के लिए थी। कांग्रेस (आई) ने अपना समर्थन वापस ले लिया और लोकसभा में अपना बहुमत खो देने के बाद चन्द्रशेखर ने भी ६ मार्च १९९१ को त्याग पत्र दे दिया।

दसवीं लोकसभा के चुनाव दो चरणों में किये जाते थे। पहला चरण २ मई को था। चुनावी में दौरे में पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गाँधी २१ मई को तमिलनाडु पहुँचे जहाँ उन्हें चेन्नई के निकट

पी.वी. नरसिम्हा राव

श्रीपेरम्बदूर में एक जन सभा को सम्बोधित करना था। भाषण देने के लिए जाते हुए एल.टी.टी.ई. की एक महिला ने मानव मब का प्रयोग कर उनकी हत्या कर दी।

चुनाव का दूसरा चरण २० दिन के लिए टाल दिया गया। जून में चुनाव हुए और परिणामस्वरूप कांग्रेस (आई) की गठबंधन पार्टियों ने २२० सीटें प्राप्त की। पी.वी. नरसिम्हा राव कांग्रेस के नेता चुने गए और २१ जून को उन्होंने प्रधानमंत्री की शपथ ग्रहण की।

- भारत की २० विभिन्न भाषाओं में २५,००० से भी अधिक गाने गाकर पाशु गायिका लता मंगेश्कर ने १९८४ के 'गिनीज बुक ऑफ रिकार्ड' के अंक में प्रवेश पर किया।

# विश्व में और कहाँ...

- २६ अप्रैल १९८६ को विश्व की सबसे बड़ी आणविक दुर्घटना घटी, जब सोवियत यूनियन के चेम्बोली अणु केन्द्र में चार रियेक्टर द्वार विस्फोट होने से आग लग गई। आणविक अंश यूरोप के अनेक देशों में फैल गए। इसका असर भारत पर भी पड़ा।

- अगस्त १९९० में जब ईराक की सेना कुवैत पर अधिकार जमाने लगी तो गल्फ युद्ध आरम्भ हो गया। अरब लीग देशों ने कुवैत से ईराकी सेना को हटाने की मांग की। सउदी अरब की अपील पर यू.एस.ए. जो ईराक के साथ युद्ध कर रहा था, उसने आशा व्यक्त की कि समझौता कर लिया जाए। (फरवरी १९९१)

- स्वीडेन की एक कम्पनी ने पहली बार सेल्यूलर फोन बनाया। (१९७९)

# एक मस्जिद और एक बाँध के ऊपर झगड़ा

डॉ. शंकर दयाल शर्मा

१७ जुलाई १९९२ को उपराष्ट्रपति डॉ. शंकर दयाल शर्मा भारत के नौवें राष्ट्रपति बने।

उत्तर प्रदेश स्थित बाबरी मस्जिद की समस्या परिणाम में ६ दिसम्बर १९९२ को बदली, जब कुछ कार सेवकों ने मस्जिद का ऊपरी हिस्सा तोड़ना आरम्भ कर दिया। झगड़ा यह था कि वहाँ पर राम का मंदिर था जो मुगल शासन काल में तोडकर मस्जिद का निर्माण किया गया था। अयोद्धा की यह घटना पूरे देश में फैल गयी और देश में साम्प्रदायिक दंगे फैल गए। एक सप्ताह के भीतर हो हजारों लोगों की हत्या कर दी गयी। इस घटना से उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, हिमाचल प्रदेश तथा राजस्थान के भाजपा मंत्रियों को पद से हटा दिया गया।

१९९३ में महाराष्ट्र में भूकम्प आया। लातुर और ओस्मानाबाद जिले पूरे तरीके से ध्वस्त हो गए। लगभग १०,००० लोगों को अपनी जान से हाथ धोना पड़ा।

उसी समय एक अलग तरह की समस्या आरम्भ हुई, जिसमें महाराष्ट्र ने गुजरात को नर्मदा नदी पर बनाए जानेवाले बाँध सरदार सोवर की ऊँचाई को कम करने के लिए कहा। पर्यावरण विशेषज्ञों ने आशंका व्यक्त की कि महाराष्ट्र में वन-सम्पदा और जन जीवन को काफी हानि हो सकती है। अगस्त १९९३ में महाराष्ट्र सरकार द्वारा दिए गए कुछ आश्वासन के चलते इस समस्या का समाधान हो गया। जिसमें मुख्य रूप से उन लोगों के पुनर्वास का आश्वासन था जो बेघर हो गए थे।

१९९४ में कश्मीर में आतंकवादी गतिविधियाँ या समस्यायें नहीं थी, फिर भी आगामी ६ महीने के लिए राष्ट्रपति शासन बढ़ा दिया गया। पाकिस्तान द्वारा अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग में किए गए आन्दोलन का विरोध किया। जिसमें वे २६ फरवरी में कश्मीर आन्दोलन हो। भारत ने बिचौलिए के प्रस्ताव पर अपनी मंजूरी नहीं थी।

आतंकवादी कश्मीर में विदेशी पर्यटकों से मिले। उसमें से छः पर्ययटकों को उन्होंने बंदी बना लिया। यह घटना १९९५ में पहलगाम में घटी। उनको मुक्त करने के बदले आतंकवादियों ने भारतीय जोलो में बंद १७ आंतकवादियों को छोड़ने की मांग की। सरकार ने यह कहते हुए उनकी मांग को ठुकरा दिया कि उनमें से मात्र दो ही कश्मीरी हैं, दूसरे पाकिस्तान और

अफगानिस्तान से हैं।

इससे पहले आतंकवादियों ने श्रीनगर के निकट स्थित चरार-ऐ-शरीफ मस्जिद पर ११ मई १९९५ को हमला कर दिया। जो पाकिस्तान द्वारा समर्थन प्राप्त आतंकवादियों ने किया। यह मस्जिद वहाँ पर बनाई गई थी जहाँ पर १५वीं शताब्दी के सूफी संत शेख नूरुद्दीन नूरानी को दफनाया गया था। जो हिन्दु-मुस्लिम एकता के वाहक थे और हिन्दुओं द्वारा वे नन्द कृषि कहे जाते थे। शेख अब्दुल्ला द्वारा पचासवें दशक में मस्जिद की मरम्मत करवाने के पूर्व हिन्दू और मुस्लिम दोनों धर्मों के लिए यह आकर्षण का केन्द्र था।

- २४ जुलाई २००० को एस. विजय-लक्ष्मी हैदराबाद में हुए अंतर्राष्ट्रीय स्तर के शतरंज में प्रथम महिला ग्रैंडमास्टर बनीं।

# विश्व में और कहाँ...

- दक्षिण अफ्रीका में अश्वेत जनता के नेता नेल्सेन मंडेला, जिन्होंने अपनी स्वतंत्रता के लिए संघर्ष किया था, वे २६ वर्ष बाद ११ फरवरी १९९० में रिहा किए गए।

- सोवियत संघ के दो खगोल शास्त्रियों ने एक अंतरिक्षयान में १७५ घंटे अंतरिक्ष में रहकर एक उच्चमान स्थापित किया। (१९७९)

- जापान ने १९७९ में वॉकमैन बनाया, जिसकी बाजार में काफी मांग थी।

# भारत द्वारा सी.टी.बी.टी. का विरोध

वर्ष १९९६ भारत के लिए एक बिल्कुल चकित करनेवाला वर्ष सिद्ध हुआ, जब यहाँ कुछ मामलों के चलते ३ प्रधानमंत्री बने। ग्यारहवीं लोकसभा के चुनाव में कांग्रेस ने अपना बहुमत खो दिया। और नरसिम्हा राव ने त्याग पत्र दे दिया। भाजपा ने अधिक सीटें प्राप्त करके ग्यारह अन्य पार्टियों के साथ मिलकर सरकार बनाने का दावा किया। १६ मई को पार्टी ने अटल बिहारी वाजपेयी को अपना नेता चुना और उन्होंने मंत्रीमंडल की स्थापना की।

एच.डी. देवेगौड़ा

मई २८ को उन्हें विश्वासमत नहीं प्राप्त हुआ और उन्होंने इस्तीफा दे दिया। उसी समय एक संघ मोर्चा १३ पार्टियों के साथ आगे आया। एच.डी. देवेगौड़ा को नेता चुना गया और एक जून को उन्होंने प्रधानमंत्री का पदभार सम्भाला।

भारत ने काम्प्रीहेन्सिव टेस्ट बैन ट्रीटी का विरोध किया। जिसकी विश्व बैठक जिनेवा में होनेवाली थी। यह कहा कि जब तक ये देश आणविक बम बनाते रहेंगे तब तक वे अविस्कार से सहमत नहीं होंगे। इस प्रकार की ट्रीटी कोई असरदार नहीं होगी। तीसरे विश्व के देश लगातार इन हथियारों से घबराए रहेंगे। भारत जिसकी चर्चा काफी महत्वपूर्ण की उसने ट्रीटी पर हस्ताक्षर करने से मना कर दिया।

भारत में १९९७ में दो प्रधानमंत्री बने। ११ अप्रैल को लोकसभा ने देवगौड़ा का विश्वासमत समाप्त कर दिया और उन्होंने त्यागपत्र दे दिया। इससे पूर्व ३० मार्च को कांग्रेस (आई) ने संघ मोर्चे से अपना समर्थन वापस ले लिया। २१ अप्रैल को आई.के. गुजराल को मोर्चे का नेता बनाया गया और वे भारत के १२वें प्रधानमंत्री के रूप में सामने आए। उनका मंत्रीमंडल भी बहुत कम समय के लिए था।

आई.के. गुजराल

२८ नवम्बर को कांग्रेस (आई, ने अपना समर्थन वापस ले लिया। उन्होंने त्यागपत्र दे

आर.के. नारायणन

दिया। उसके बाद राष्ट्रपति ने लोकसभा भंग कर दी और नए चुनावों के लिए मांग की।

२५ जुलाई १९९७ में जब राजीव गाँधी की हत्या हुई तब एक भारी मानव बम का विस्फोट हुआ उसी प्रकार १४ फरवरी १९९८ में कोयम्बटूर में भी हुआ।

यहाँ १८ अलग-अलग जगहों में बम विस्फोट हुए जिन्में ८४ लोग मारे गए। एक विस्फोट वहाँ भी हुआ। जहाँ राजीव गाँधी की हत्या हुई थी। जहाँ पर एल.के. आड्वाणी आनेवाले थे। एक मुस्लिम आतंकवादी पार्टी ने उत्तरदायी बताया।

- २५ जनवरी १९८३ में हुए विश्व क्रिकेट कप जीत लिया। १ लंदन में वेस्ट इन्डीज को ४३ रनों से हराया। यह अच्छा अवसर था कि २५ जून १९३२ को ही भारत ने लार्डस लंदन के खिलाफ अपना पहला टेस्ट मैच खेला था।

# विश्व में और कहाँ...

- पूरे यूरोप में मार्क्सवाद की सत्ता समाप्त होने के कारण सोवियत संघ बंट गया और प्रांतीय देश स्वतंत्र हो गए। बोरिस यल्तिसिन ने गोर्बाचिव से सत्ता उनके हवाले करने की मांग की। २४ दिसम्बर १९९१ को यल्तिसिन गणतंत्र रशिया के राष्ट्रपति बने।

बोरिस यल्तिसिन

- महात्मा गाँधी नामक पहली फीचर फिल्म, जिसके निर्देशक रिचर्ड ऐटेनबार्ह थे, १९८२ में पर्दे पर लायी गई। इस फिल्म ने आठ ऑस्कर पुरस्कार प्राप्त किया, जिसमें सर्वोत्तम फिल्म, सर्वोत्तर निर्देशन और सर्वोत्तम अभिनेता (बेन किंगसले जिसने मुख्य भूमिका निभायी)

# भारत ने आणविक क्षमता का परीक्षण किया

बारहवीं लोकसभा का चुनाव मार्च १९९८ में हुआ। किसी भी राजनीतिक दल को बहुमत नहीं मिला। भाजपा और इसके गठबंधियों २७७ सीटों पर चुनाव जीता, कांग्रेस ने १४१ पर। अटल बिहारी वाजपेयी नेता चुने गए। १२वें प्रधानमंत्री के रूप में उन्होंने १९ मार्च को शपथ ग्रहण की। २८ मार्च को उन्होंने १३ मतों विश्वास प्रस्ताव जीत लिया।

ए.बी. वाजपेयी

११ मार्च १९९८ को पोखरण राजस्थान में भारत ने एक बार फिर आणविक परीक्षण किया। दो दिन बाद भारत ने फिर से परीक्षण किया जिसमें यह प्रमाणित हो गया कि भारत रिमोट कन्ट्रोल द्वारा भी आणविक परीक्षण कर सकता है।

१९९९ में आतंकवाद ने अपना भयावह रूप धारण कर लिया जिसमें बिहार, आंध्रप्रदेश, जम्मू और कश्मीर, उड़ीसा, दिल्ली तथा त्रिपुरा शामिल है। भारत को उस समय काफी आघात पहुँचा जब काठमांडु से दिल्ली जानेवाला एक हवाई जहाज का २४ दिसम्बर को अपहरण कर लिया गया।

दूसरे दिन यह काँधार अफगानिस्तान में

जाकर उतरा। १८९ यात्री और चालक दल ६ दिनों के समझौते की बातचीत के बाद छोड़े गए।

भारत और पाकिस्तान ने नई दिल्ली से लाहौर तक एक बस चलाने का निर्णय लिया। २० फरवरी १९९९ को प्रधानमंत्री वाजपेयी ने आरम्भ यात्रा की। दूसरे दिन उन्होंने दो देशों के बीच मित्रता का संबंध स्थापित करने के लिए हस्ताक्षर किए। यह संबंध स्थापित करने के लिए हस्ताक्षर किए। यह संबंध तब समाप्त हो गया जब पाकिस्तानी सेना ने कारगिल के दर्रों पर कब्जा कर लिया। जिससे के भविष्य की तकलीफों से बचा जा सके। ७४ दिनों के बाद २६ मई १९९९ को युद्ध समाप्त हो गया।

लोकसभा में एक मत के कारण १७ अप्रैल को वाजपेयी सरकार गिर गयी। २६ अप्रैल को लोकसभा भंग कर दी गयी। पाँच चरणों में फिर से सितम्बर में चुनाव हुए। राष्ट्रीय जनतांत्रिक

गठबंधन और भाजपा ने २६९ सीटें हासिल की। तेलुगू देशम के समर्थन से राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन पुनः बाजपेयी को प्रधानमंत्री बनाकर, सत्ता में आयी। १३ अक्टूबर १९९९ को ७० सदस्यीय मंत्रिमंडल का गठबंधन हुआ।

- जकार्ता में हुए १९८५ के एशियाई खेलों में भारत की पी.टी. उषा ने ५ स्वर्ण पदक हासिल किए। जो भारतीय महिला धाविकाओं के लिए उच्चमान था।

- २४ दिसम्बर २००० को विश्वनाथ आनन्द ने तेहरान में आयोजित विश्व शतरंज प्रतियोगिता जीत ली। यह पहले एशियाई व्यक्ति हैं जिन्होंने विश्व चैम्पिनशिप जीती।

# विश्व में और कहाँ...

- ४५ वर्ष पुराने फिलिस्तीनी समस्या पर शांति वार्ता यू.एस. के राष्ट्रपति बिल क्लिंटन ने आरम्भ की। १३ सितम्बर १९९३ में इजराईल के प्रधानमंत्री यितजाक रैबिन और फिलीस्तीनी स्वतंत्रता संगठन के अध्यक्ष

यस्सर अराफात

यस्सर अराफात शांति बार्ता के लिए राजी हो गए। जिसमें फिलीस्तीन को एवं स्वतंत्र राष्ट्र घोषित किया जाना था।

- उटाह मेडिकल विश्व विद्यालय के चिकित्सकों ने २ दिसम्बर १९८२ में फाइबर, शीशे और प्लास्टिक से बने हृदय को एक ६१ वर्ष के व्यक्ति को सफलतापूर्वक लगा दिया।

# यू.एस.ए. और रशिया ने भारत की स्थिति का समर्थन किया

गत वर्ष दो विश्व नेताओं के दौरे के लिए यादगार बना। जिसमें यू.एस. के राष्ट्रपति बिल क्लिंटन और रशिया के राष्ट्रपति वलादीमीर पुतिन सन् दो हजार में भारत आये। बिल क्लिंटन १९ और २० मार्च को यहाँ आए। यह २० वर्षों में किसी अमेरिकी राष्ट्रपति की पहली यात्रा थी। उन्होंने पाकिस्तान द्वारा सीमा पार आतंकवाद की निंदा की। उन्होंने कहा कि लाईन ऑफ कन्ट्रोल की इज्जत करने से भारत-पाकिस्तान समस्या को सुलझाने में आसानी होगी।

बिल क्लिंटन

रशिया के राष्ट्रपति जो २ अक्टूबर को भारत की चार दिनों के दौरे पर आये, उन्होंने भारत-पाकिस्तान झगड़े में विदेशी हस्तक्षेप को गलत बताया। भारत ने रशिया के साथ एक संबंध पत्र पर हस्ताक्षर किया, जिसमें आणविक शस्त्रों के शांतिपूर्वक प्रयोग किया जा सके।

सन् २००० के दौरान तीन नए राज्यों की स्थापना हुई। अक्टूबर को मध्यप्रदेश से छत्तीस गढ़ को अलग कर लिया गया। ८ नवम्बर को उत्तरांचल की स्थापना हुई। झारखण्ड २८वाँ राज्य बना। जो १४ नवम्बर को बिहार से अलग कर दिया गया।

वलादिमिर पुटिन

वाजपेयी सरकार ने आधी शताब्दी पुराने कानून में फेर बदल करने की आवश्यकता समझी और उसके लिए ११ सदस्यीय एक आयोग की निर्युक्ति की। सरकार ने १५ फरवरी को यह भी निर्णय लिया कि ५४५ सीटों वाली लोकसभा आगामी २५ वर्षों के लिए ऐसी ही रहेगी।

कश्मीर में उग्रवाद के चलते हुए भी भारत-पाकिस्तान के बीच कोई बातचीत नहीं हो सकी कि इसे किस प्रकार समाप्त किया जा सके। दोनों देशों के बीच सीमा आक्रमण की घटनाएँ भी घटीं। १९ नवम्बर को रमजान महीनों में जम्मू-कश्मीर में शांति की घोषणा करते हुए प्रधानमंत्री ने एक साहसिक कदम उठाया। उन्होंने किसी भी हालत में सीमा पर गोलीबारी न करने को कहा।

२० दिसम्बर से बढ़ाकर अपनी इस घोषणा को प्रधानमंत्री ने २६ जनवरी २००१ कर दिया। उन्होंने कहा कि जब यू.एन. दो देशों के बीच में विदेशी हस्तक्षेप नहीं चाहता तो उसे भूल जाना अच्छा है। कश्मीर की समस्या हमारे दो देशों के बीच है।

# धन से भी महान

सीतापति खेती के कामों में माहिर था। खेती की बारीकियों को जानने के लिए बहुत से लोग उसके पास आया करते थे। वह कृषि की महात्मा के बारे में सबको समझाता था। वह कहा करता था कि किसान ही भूमि पर एक ऐसा प्राणी है, जो औरों को पेट भर खिला पाता है।

रघुपति, सीतीराम का इकलौता बेटा था। वह बड़ा ही सुशील बुद्धिमान था। सब लोगों ने उसे काशी भेजकर पढ़ाने की सलाह दी। सीताराम ने उनकी यह सलाह मान ली क्योंकि उसे लगा कि पढ़ने से वह कृषि में और ज्ञान पायेगा और वृद्धि लायेगा। उसने अपने बेटे को काशी के एक गुरूकुल में शिक्षा प्राप्त करने भेजा।

सभ्यता के व्याप्त हो जाने के कारण गुरूकुल अब अरण्य में नहीं रहे बल्कि शहरों के समीप स्थापित होने लगे। शिक्षितों की संख्या बढ़ती गयी। इसलिए उसके साथ-साथ बेरोज़गारी भी बढ़ती गयी। अत: गुरूकुलों में शास्त्र व पुराणों की ही शिक्षा नहीं दी जा रही थी बल्कि आत्मनिर्भर होने के लिए आवश्यक शिक्षाएँ भी दी जाने लगीं। उनमें से कृति शास्त्र भी एक था।

रघुपति ने गुरूकुल में प्रविष्ठ होकर कृषि शास्त्र से संबंधित विशेषताएँ सीखीं। छुट्टियों में जब वह अपने घर जाता था। तब वह अपने पिता से तत्संबंधी विषयों को लेकर चर्चाएँ करता रहता था। सीतापति को अपने बेटे के ज्ञान पर बेहद खुशी होती थी।

थोड़े समय के बाद रघुपति की शिक्षा पूरी हुई। किन्तु नगरीय जीवन के प्रति उसका आकर्षण अब भी बना रहा। उसने एक दिन अपने पिता से साफ़-साफ़ कह दिया "मैं नगर में कोई बड़ा उद्योग स्थापित करूँगा। कृषि उत्पादनों से आकर्षणीय बस्तुओं को तैयार करूँगा। हम पीढ़ियों से जो कमा पाये, उससे दस गुना अधिक इस उद्योग से कमाऊँगा।"

सीतापति को यह अच्छा नहीं लगा कि उसका बेटा गाँव छोड़कर चला जाए और खेती करना छोड़ दे। उसने रघुपति को समझाने के उद्धेश्य से कहा " बेटे, जो शांति गाँव में मिलेगी वह नगर में उपलब्ध नहीं होगी। खेती हमारे परिवार का पेशा है। हम जैसे लोगों को कृषि ही शोभा देती है। कुछ और लोगों को खिला सकने में जो आनंद

कोई भी सूदखोर इतनी धन-राशि अवश्य देगा। उद्योग को शुरू करते ही कम अवधि में ही हम रकम वापस कर देंगे'' रघुपति ने कहा।

सीतापति अन्न देनेवाली भूमि को माँ समान मानता था तो शरण देनेवाले घर को पिता समान। उनके बल पर ही वह अपना सीधा-साधा जीवन बिता रहा था। उसे बेटे का यह प्रस्ताव अच्छा नहीं लगा। उसने बेटे से कह दिया "मैं अपने माता-पिता को किसी भी हालत में गिरवी नहीं रखूँगा। अगर कोई मेरे वचन का विश्वास करके यह रकम देने के लिए तैयार हो तो मैं लूँगा।"

तब रघुपति ने नगर में रहनेवाले कुछ रिश्तेदारों के नाम बताये। ऐसे तो वे करोड़पति हैं, लेकिन फिलहाल उनका आना-जाना बंद है। इसलिए सीतापति ने कहा "बेटे, मैं मांगू और वे न कह दें तो इससे बढ़कर मेरे लिए और अपमान नहीं होगा। तुम्हारी दृष्टि में कोई ऐसा, कोई हो तो उस व्यक्ति का नाम बताना। मैं स्वंय उससे कर्ज़ मांगूंगा।"

"पिताजी, आपकी बातें हिरण्याकश्यप जैसी हैं। मैं जान गया कि आप मेरी सहायता करना नहीं चाहते।" रघुपति ने नाराज़ होते हुए कहा।

बेटे के आरोप से सीतापति को दुःख हुआ। वह अपनी ईमानदारी को साबित करने के लिए तीव्र रूप से सोचने लगा। तब उसे अचानक कमला की याद आयी।

कमला, सीतापति के बड़े चाचा की बेटी थी। दहेज़ को लेकर उसकी शादी रूक जानेवाली थी तो सीतापति ने समय पर आवश्यक रकम देकर उसकी सहायता की। उस दिन कमला ने सीतापति के हाथों को अपने हाथों में लेते हुए कहा " ज़रूरत के समय इतनी रकम देने के लिए मेरे रिश्तेदारों में से कोई आगे नहीं आया। भैय्या तुम्हारा किया हुआ यह उपकार जिन्दगी भर याद रखूँगी। मुझे पूरा विश्वास हैकि भगवान मुझे भी ऐसा एक

मिलता है, वह और कहाँ मिलेगा? यह समझना केवल तुम्हारा भ्रम है कि आमदनी के बढ़ने से और सुख मिलेगा।"

रघुपति को अपने पिता की ये बातें सही नहीं लगी। उसने स्पष्ट कह दिया " पिताजी मानता हूँ कि खेती करते हुए आप औरों को खिला पा रहे हैं। पर जब मैं उद्योग की स्थापना करूँगा, तब उसके द्वारा अनेकों को रोज़गार दिलाऊँगा। चूँकि मैं कृषक परिवार से आया हुआ व्यक्ति हूँ, इसलिए किसानों को मुझसे लाभ भी पहुँचेंगे।"

इन दीर्घ चर्चाओं के बाद सीतापति को लगा कि उसके बेटे की बातों में भी सचाई है। आखिर उसने अपनी स्वीकृति दे दी। किन्तु उद्योग की सम्पता के लिए कम से कम एक लाख रूपयों की आवश्यकता होगी। इतनी बड़ी रकम कर्ज के रूप में देनेवाला गाँव भर में कोई नहीं था।

" नगर में कितने ही व्यापारी हैं, जो कर्ज पर रकम देते हैं। अपना सारा खेत गिरवी कर रखेंगे तो

सुअवसर देंगे और मैं इसका प्रतिफल दे पाऊँगी।"

सचमुच ही भगवान ने उसकी सहायता की। शादी के दो सालों के बाद ही उसके पति ने नौकरी छोड़ दी और व्यापार करने लगा। तब से उनके जीवन में वृद्धि होती गयी। कमाई दिन ब दिन बढ़ती गयी। अब वे करोड़पति हैं।

बेटे को लेकर सीतापति उस नगर में गया, जहाँ कमला रहती थी। कमला ने उन दोनों का भव्य स्वागत किया। उनका अच्छा आतिथ्य किया। सीतापति ने देरी किये बिना उनके आने का कारण उसे बताया।

यह सुनकर कमला का चेहरा पीला पड़ गया। उसने कहा "भैय्या, मेरे पति किसी को भी कर्ज देने के पक्ष में नहीं हैं। यह उनका सिद्धांत और आदर्श भी है, परन्तु वे न कहनेवालों में से नहीं हैं। किन्तु कोई न कोई कारण बताकर उनके पास सहायता मांगने आये लोगों को लौटा देते हैं। एक दिन भर तक उनकी चर्चाओं को गौर से देखो और सुनो कि वे कौन-कौन से कारण बताकर लोगों को निराश लौटाते हैं। फिर सोचना कि तुम क्या कोई ऐसा उपाय ढूँढ सकोगे, जिससे वे किसी कारण की आड़ में तुम्हें निराश न कर सकें। जहाँ तक तुझे मालूम है, आज तक उनसे कोई भी कर्ज़ नहीं ले पाया।"

सीतापति को लगा कि कमला इस विषय में निर्दोष है। उसकी बातों में कोई कपट नहीं है। उसे मालूम है कि विवाहित स्त्री अपने पति की इच्छा के विरुद्ध जाने का साहस नहीं कर पाती। इसलिए उसने कमला के दिखाये रास्ते पर ही जाने का निश्चय किया। वह कमला के पति के साथ ही रहता हुआ ध्यान से सब कुछ देखने लगा और जानने की कोशिश काने लगा।

एक आदमी अपनी बेटी के दहेज़ के लिए कर्ज़ मांगने कमला के पति के पास आया। कमला के पति ने उससे कहा " कर्ज़ लेने पर उसे चुकाने का

मार्ग भी पहले ही से ढूँढना पड़ता है। ऐसे तो दहेज देने की प्रथा के मैं विरुद्ध हूँ। मैं इसका कदापि समर्थन नहीं करूंगा। अनावश्यक ही किसी बड़े घरों में शादी कराने के पीछे क्यों पड़े हो? अपने योग्य रिश्ता ढूँढो और अपनी बेटी की शादी कर दो। तब इस कर्ज़ की झंझट में ही पड़ने की नौबत नहीं आयेगी। जाओ और ऐसे वर को ढूँढो। इससे तुम भी सुखी रहोगे और तुम्हारी बेटी भी।"

एक और कर्ज़ मांगने आया तो उसने उससे सलाह दी " तुम्हारा बेटा बड़ा हो गया है काफी पढ़ा-लिखा है और तुम मुझसे कर्ज़ मांगने आये? अपने बेटे की शादी की घोषणा कर दो, तो बस बहुत से ऐसे लोग क़तार में खड़े हो जायेंगे, जो ज्यादा से ज्यादा दहेज देने आगे बढ़ेंगे।"

उस आगत ने कहा कि मैं दहेज लेने के विरोध में हूँ और यह मेरा आदर्श है तो कमला के पति ने उसे समझाया-" जब तुम अपने आदर्श को छोड़ना नहीं चाहते तो भला मैं अपने आदर्श को क्योंकर

छोड़ूँ? कर्ज न देना मेरा आदर्श है। कर्ज न लेने के आदर्श का पालन हर कोई करे तो दुनिया भर में धन से संबधित आधी समस्याओं का परिष्कार आप ही आप हो जायेगा।"

कमला के पति की इस व्यवहार-शैली को देखने के बाद रघुनाथ व सीतापति अच्छी तरह से समझ गये कि वह किसी भी हालत में कर्ज नहीं देगा। फिर भी सीतापति ने उससे कर्ज़ पूछने का निश्चय किया। परंतु रघुपति ने अपने पिता से कहा " पिताजी, मैं आपके आदर्श को मानता हूँ। अगर इन्होने कर्ज़ देने से इनकार कर दिया तो आपको बड़ा दुःख होगा। आपका अपमान होगा। अच्छा इसी में है कि हम यहाँ से चुपचाप चले जाएँ।"

सीतापति ने अपने बेटे की सलाह नहीं मानी। उस दिन रात को उसने कमला के पति से पूरी बात बतायी और लाख रूपये कर्ज़ के रूप में मांगे।

यह सुनते ही कमला के पति ने आश्चर्य भरे स्वर में कहा " यह क्या? आपका बेटा उद्योग स्थापित करना चाहता है? वह भी शहर में जाकर? कृषि के संबंध में आपके विचारों से मैं बहुत प्रभावित हुआ। आपके विश्वासो की मैं दाद देता हूँ। अगर आपका बेटा आपके विचारों व आपके विश्वासों की विरूद्ध जाना चाह रहा हो तो मैं कदापि आपकी सहायता नहीं करूँगा। कृपया मुझसे सहायता की आशा मत रखिये।"

रघुपति चिढ़ते हुए बोल पड़ा " आपके कहने का यह मतलब हुआ कि मेरे विश्वास और मेरे विचार खोखले हैं।"

" औरों के विश्वासों एंव बिचारों को ठुकराने से किसी के भी आशय कैसे उत्तम माने जा सकते हैं?" कमला के पति ने पूछा।

उसके इस जवाब से रघुपति को स्पष्ट मालूम हो गया कि उद्योग की स्थापना के लिए अपने पिता से भी धन मांगना नहीं चाहिये। आत्मनिर्भर होना चाहिये और स्वंय अपने लक्ष्य की पूर्ति में जुट जाना चाहिये। यह सत्य जानते ही रघुपति ने कमला के पति से कहा आपसे कर्ज लेने जो आते हैं, उन्हें पहले ही से मालूम हैकि आप कर्ज़ देनेवाले नहीं हैं। फिर भी वे क्यों आपके पास आते हैं, अब मैं अच्छी तरह से जान गया। इसलिए कि आप उनकी समस्याओं का परिष्कार मार्ग सुझाते हैं। अब मैं जान गया कि मेरे पिताजी भी यह जानकर ही आपसे कर्ज़ मांगने आये। मुझे ज्ञानोदय हो गया। मैं उद्योग की स्थापना का विचार छोड़ दूँगा और कृषि कार्य में अपने पिताजी का हाथ बँटाऊँगा

रघुपति के इस निर्णय से उसके पिता और कमला का पति बहुत ही प्रसन्न हुए।

# महाभारत

युधिष्ठिर तथा याज्ञिकों के प्रश्न के उत्तर में नेवले ने यों कहा :

''मैं झूठ नहीं बोल रहा हूँ। यह यज्ञ कभी भी सत्तू के दान की समता नहीं कर सकता। यह बात मैंने स्वयं देख ली है ! पौधों से झरे दाने चुनकर कुरुक्षेत्र में निवास करने वाले मुनि, उनकी पत्नी, पुत्र व पतोहू भी स्वर्ग में गये हैं। उन्हीं की वजह से मेरे शरीर का आधा भाग स्वर्णिम बन गया है।

''मैंने जिन ब्राह्मण का उल्लेख किया है, वे अपनी पत्नी, पुत्र व पतोहू के साथ उञ्च वृत्ति के साथ पक्षियों की तरह जीवन बिताते थे। वे लोग दिन में एक बार आहार ग्रहण करते थे।

''एक बार भयंकर अकाल पड़ा। इस प्रदेश के सारे पेड़-पौधे झुलस गये। उस परिवार को दिन में एक बार भी खाने का मौक़ा न मिलता था। एक दिन की दुपहरी को तीक्ष्ण धूप में तपते उन लोगों ने थोड़े से जो अन्न प्राप्त किये। उसका आटा बनाकर, चार कौर बनाये; चारों बांट कर खाने ही वाले थे, तभी एक ब्राह्मण उनकी कुटी में अतिथि बनकर आया।

''उस भूखे ब्राह्मण को सबने घर के भीतर बुलाया, अर्घ्य व पाद्य देकर कुश के आसन पर बिठाया। तब उस घर के गृहस्थ ने अपनी बारी के

सत्तू का पिंड उसके हाथ दिया। अतिथि ने उसे खाया, तब भी उसका पेट न भरा था। इस पर ब्राह्मण ने अपने हिस्से का आहार भी उस अतिथि को बड़ी प्रसन्नतापूर्वक दे दिया। इसके बाद उस अतिथि ने क्रमशः ब्राह्मण के पुत्र व बहू के हिस्से का भी आहार ग्रहण किया। तब प्रसन्न होकर उस ब्राह्मण ने बताया कि वह यमराज है और सबको स्वर्ग की प्राप्ति होने का वर दान देने आया है।

''महाशयों, उस वक्त मैं अपने सुरंग से बाहर आया। उस सत्तू की गंध के लगने तथा वहाँ के पानी में भीगने के कारण मेरा सर तथा शरीर का आधा भाग सोने के रंग में बदल गया। मैं यह जानकर यहाँ पर बड़ी आशा को लेकर आया कि यहाँ पर बहुत बड़ा यज्ञ हो रहा है, इसलिए मैं अपने शेष शरीर को भी स्वर्णिम बना लूँ! लेकिन मेरी वह आशा पूर्ण न हुई।''

यों सुनाकर वह नेवला सबके देखते-देखते वहीं पर अदृश्य हो गया।

युधिष्ठिर अपने भाइयों समेत राज्य का शासन कर रहा था। विदुर, संजय व युयुत्स धृतराष्ट्र की सेवा में तत्पर रहते थे। कुंती सदा गाँधारी के साथ रहा करती थी। द्रौपदी, सुभद्रा, पांडवों की अन्य पत्नियाँ भी सदा उनकी देख-रेख किया करती थीं। व्यास अकसर वहाँ पर आते और कथा-कहानियाँ सुनाकर चले जाते। युधिष्ठिर किसी भी बात में धृतराष्ट्र के विरुद्ध मुँह खोलता न था। धृतराष्ट्र जो भी चाहते, युधिष्ठिर उसी समय उसे मंगवा कर देता। पांडव इस तरह उसे मंगवा कर देता। पांडव इस तरह व्यवहार करते थे जिससे गाँधारी तथा व्यवहार करते थे जिससे गाँधारी तथा धृतराष्ट्र को उनके पुत्रों के वियोग का दुख न सतावे। भीम अकेले ही धृतराष्ट्र से अप्रसन्न रहता था।

धृतराष्ट्र अक्सर दान-धर्म किया करता था। ब्राह्मणों को अग्रहार देता था। युधिष्ठिर ने अपने दरबारियों को कठिन आदेश दे रखा था कि धृतराष्ट्र की इच्छा के विरुद्ध व्यवहार करनेवालों को कठिन से कठिन दण्ड दिया जाएगा। संक्षेप में कहना हो तो धृतराष्ट्र के पुत्रों के जीवित रहने पर उसके दिन जैसे गुजर सकते थे, वैसे ही उनका शासन चलता था। गाँधारी और धृतराष्ट्र भी पांडवों को अपने पुत्रों के समान मानते थे।

इस प्रकार पंद्रह वर्ष बीत गये। धृतराष्ट्र तथा गाँधारी को किसी तरह की असुविधा न रही, मगर मौक़े पर भीम की जली-कटी बातें सुनकर उनके दिल दुखते थे। पर यह बात युधिष्ठिर को मालूम न थी।

एक दिन धृतराष्ट्र ने युधिष्ठिर से कहा- ''बेटा, तुमने आज तक हमारे प्रति बड़ा आदर दिखाया।

इससे हम दोनों बहुत ही प्रसन्न हैं। मैंने अनेक दान-धर्म किये, क्षत्रिय धर्म का अवलंबन कर मेरे पुत्र उत्तम लोकों को प्राप्त हुए हैं। मैंने उनके लिए श्राद्ध कर्म भी किये। अब मेरे द्वारा होनेवाला कोई कार्य बच न रहा। मुझे अब ऐसे पुण्य का अर्जन करना है जिससे मुझे व्यक्तिगत रूप से लाभ प्राप्त हो ! तुम मान जाओगे तो मैं वानप्रस्थ में जाना चाहता हूँ। गाँधारी भी मेरे साथ रहेंगी। मैं वन में रह कर भी तुम्हें आशीर्वाद देता रहूँगा कि सदा सर्वदा तुम्हारा कल्याण हो !''

इस पर भी युधिष्ठिर ने नहीं माना। उसने बताया-''आप वन में कष्ट भोगते रहेंगे तो मैं यहाँ सुखपूर्वक शासन नहीं कर सकता। आप उपवास करते पृथ्वी पर शयन करेंगे तो मेरी तथा मेरे भाइयों की भी क्या दुनिया निंदा नहीं करेगी? मुझे यह राज्य नहीं चाहिए; और न ये सुख-भोग ही। मैं यह राज्य युयुत्स को सौंप देता हूँ। मुझे ऐसा लगता है कि आप किसी कारण बश दुखी होकर ये बातें कह रहे हैं। मैं आपके दुख को दूर कर सकता हूँ।''

''मेरे मन में तपस्या करने की कामना है। हमारे वंश के लोगों के लिए वनवास करने की परिपाटी रही है। मैं तुम्हारे पास काफी समय तक रहा। मैं वृद्ध भी हो चुका हूँ। मेरे वनवास को तुम्हें मान लेना चाहिए।'' धृतराष्ट्र ने समझाया। उसने वानप्रस्थ में जाने के लिए न केवल हठ किया, बल्कि यदि युधिष्ठिर इसके लिए अपनी सम्मति न देंगे तो वह भोजन तक न करेगा।

उस वक्त व्यास पहर्षि ने वहाँ पर पहुँचकर युधिष्ठिर को समझाया कि धृतराष्ट्र को वानप्रस्थ में जाने के लिए सम्मति दे। तब जाकर युधिष्ठिर ने मान लिया और धृतराष्ट्र ने भी अनशन तोड़कर भोजन भी किया।

धृतराष्ट्र के वानप्रस्थ में जाने का समाचार जानकर हस्तिनापुर के सभी वर्णों के लोग उन्हें देखने आये। धृतराष्ट्र ने उन लोगों से कहा-''मैं और गाँधारी दोनों मिलकर बनवास में जा रहे हैं। इसके लिए आप लोगों को हमें अनुमति देनी होगी। मेरा पूर्ण विश्वास है कि दुर्योधन की अपेक्षा युधिष्ठिर कहीं अच्छा शासन करता है। इस पृथ्वी पर पहले शंतनु, बाद में भीष्म और विचित्रवीर्य ने शासन किया था। मैंने भी यथाशक्ति आप लोगों की थोडी-बहुत सेवा की। मैं नहीं जानता कि मेरा शासन कार्य कैसा था? उसमें अगर कोई भूलें हों तो मुझे क्षमा कर दीजिए। हमारे दुर्योधन ने दुष्ट बुद्धि के कारण क्षत्रिय वंश का विनाश किया है, उसमें मेरा भी दोष रहा है। मैं आप लोगों के सामने हाथ जोड़कर विनती करता हूँ कि आप लोग उन त्रुटियों को भूल जाइए। आज से युधिष्ठिर आप लोगों पर शासन करेगा।''

विदुर की बातें सुन धन देने के लिए युधिष्ठिर और अर्जुन ने बड़ी प्रसन्नता के साथ स्वीकार कर लिया, पर भीम मौन रहा। इस पर अर्जुन ने भीम को समझाया-''तुम भी थोड़ा धन दे दो! धृतराष्ट्र वानप्रस्थ जाने के पहले श्राद्ध करने के लिए हम से धन की याचना कर रहे हैं। तुम्हें शायद स्मरण होगा कि हमने भी एक बार अपने राज्य के लिए उनकी याचना की है।''

इस पर भीम ने कहा-''भीष्म, सोमदत्त, बाह्लिक, भूरिश्रव, द्रोण तथा अन्य लोगों के लिए श्राद्ध कर्म करने के वास्ते धन दिया जा सकता है, कर्ण के लिए कुंती धन देंगी; पर दुर्योधन आदि के लिए हम धन क्यों दें? वे अगर उत्तम लोकों को प्राप्त न करें तो क्या हुआ? हमें तो उन लोगों ने असंख्य यातनाएँ जो दी हैं?''

ये बातें सुनकर जनता के प्रतिनिधि के रूप में एक ब्राह्मण ने धृतराष्ट्र से कहा-''राजन! आपने हमारे प्रति बड़े ही स्नेह का व्यवहार किया है। आपके वंश के किसी व्यक्ति ने हमें कोई कमी होने न दी। दुर्योधन ने भी हमारे प्रति कोई द्रोह नहीं किया है। आप वनवास में जायेंगे तो हम सदा के लिए संताप का अनुभव करेंगे। युद्ध ला खड़ा करने के कारण हम दुर्योधन को दोष नहीं देते। कुरु वंश के क्षय का कारण भगवान हैं, अन्य कोई नहीं है। युधिष्ठिर उत्तम पुरुष हैं। हम चाहते हैं कि वे हम पर एक सहस्त्र वर्ष तक शासन करें।''

दूसरे दिन सबेरे विदुर युधिष्ठिर के पास आकर बोले, ''बेटा, धृतराष्ट्र कार्तिक मास में वनवास करने जानेवाले हैं। जाने के पूर्व वे भीष्म, सोमदत्त, बाह्लिक, द्रोण, सैंधव, अपने पुत्र तथा मित्रों के भी श्राद्ध-कर्म करनेवाले हैं। इसके लिए वे थोड़ा धन चाहते हैं।''

तब युधिष्ठिर ने भीम से कहा-''अब तुम मौन रहो तो अच्छा है!'' फिर विदुर से कहा-''भीम को दुखी होने की कोई ज़रूरत नहीं। धृतराष्ट्र जो भी धन चाहते हैं, मैं दे दूँगा।''

इसके उपरांत धृतराष्ट्र ने बड़े पैमाने पर श्राद्ध कर्म किये। युधिष्ठिर के द्वारा अपार दान दिलाये। इस कार्य के समाप्त होते ही दूसरे दिन धृतराष्ट्र गाँधारी के साथ कार्तिक पूजा करके, वल्कल पहने वानप्रस्थ के लिए चल पड़े। उनके आगे अग्निहोत्र चल पड़े। उनके पीछे कौरव नारियाँ चलीं। उनके जाते देख पांडव रो पड़े। कुंती देवी ने गाँधारी का हाथ पकड़कर चलाया। द्रौपदी, सुभद्रा, परीक्षित के साथ उत्तरा तथा नगर की नारियाँ भी चल पड़ीं। विदुर तथा संजय ने धृतराष्ट्र के साथ जाने की अनुमति प्राप्त की।

धृतराष्ट्र ने नगर का द्वार पारकर युयुत्सु तथा कृपाचार्य को वापस लौटने को कहा। एक-एक

करके पीछे हट गये। आख़िर युधिष्ठिर मात्र बचे रहे। उसने कुंती देवी से कहा-''माँ, तुम लौट जाओ। मैं इस महाराज के साथ जाऊँगा।''

मगर कुंती ने गाँधारी तथा धृतराष्ट्र के साथ जाने का निश्चय कर लिया। उसने युधिष्ठिर से कहा-''बेटा, गाँधारी और धृतराष्ट्र मेरे सास-ससुर के समान हैं। इनकी सेवा करते मैं भी तपस्या करूँगी।'' सभी पांडवों ने उसको रोकना चाहा। मगर उसने उनकी बात नहीं सुनी। आखिर विवश हो पांडव द्रौपदी के साथ हस्तिनापुर को लौट आये।

धृतराष्ट्र शाम तक चलकर गंगा के तट पर एक स्थान पर रुक गये। ब्राह्मणों ने अग्निहोत्र किये। तब विदुर और संजय ने धृतराष्ट्र तथा गाँधारी के वास्ते कुशों के शयन तैयार किये। वह रात आनंद से बीत गई।

विदुर की सलाह पर गंगा के तट पर ही धृतराष्ट्र के लिए एक पर्णशाला बनाई गई। वहाँ पर कुछ दिन रहकर धृतराष्ट्र कुरुक्षेत्र के एक आश्रम में पहुँचे। वहाँ पर शतायूप नामक एक राजर्षि रहा करता था। वह अपने पुत्र को राज्य सौंपकर वानप्रस्थ में आया था। धृतराष्ट्र ने तपस्या प्रारंभ की। उन्हें देखने के लिए यदि कोई आ जाते तो कुंती उनकी परिचर्या करती थी। धृतराष्ट्र तपस्या करते बीच-बीच में अनेक कथाएँ सुना करते थे।

धृतराष्ट्र के चले जाने पर नगरवासियों को लगा कि नगर की शोभा घट गयी है। वे सदा उस वृद्ध राजा के बारे में बातचीत किया करते थे। अब पांडवों की बात तो कुछ कहने की ज़रूरत न थी। धृतराष्ट्र के साथ अपनी माँ कुंती के चले जाने से वे जीवित शव के समान हो गये थे और किसी चीज़ के प्रति भी उनकी अभिरुचि न रही।

सबसे अधिक सहदेव व्याकुल हो उठा। वह कुंती को देखने के लिए उतावला रहने लगा। द्रौपदी ने भी एक दिन युधिष्ठिर से बताया-''सभी औरतें गाँधारी, धृतराष्ट्र तथा कुंतीदेवी को देखना चाहती हैं।''

फिर क्या था, तत्काल ही युधिष्ठिर ने धृतराष्ट्र के आश्रम के लिए यात्रा का प्रबंध किया। उसने घोषणा करायी कि जनता भी आना चाहे तो आ सकती है। दूसरे दिन ही यात्रा का प्रबंध हुआ।

उनके साथ एक महा सेना ही चल पड़ी। रथ, घोड़े, ऊँट तथा पैदल भी लोग चल पड़े। औरतें पालकियों पर चल पड़ीं। युयुत्स तथा धौम्य राजमहल में रह गये। पांडवों के आगमन का समाचार जानकर कुछ आश्रमवासी उन्हें देखने आये। युधिष्ठिर ने उनसे पूछा-''मेरे काकाजी कहाँ पर हैं?''

उन लोगों ने बताया कि धृतराष्ट्र पुण्य तथा

जल लाने के लिए यमुना नदी में गये हुए हैं। पांडव उनके बताये मार्ग पर गये और दूर पर धृतराष्ट्र, गाँधारी तथा कुंतीदेवी को देखा। सहदेव तेज़ी से दौड़कर गया और कुंतीदेवी के चरण पकड़कर रोने लगा। उसने भी आँसू बहाते सहदेव को उठाकर उसको आलिंगन में ले लिया और यह समाचार गाँधारी को दिया। इतने में उसे और पांडव भी दिखाई दिये।

इसके बाद पांडव तथा उनकी पत्नियों को अपने चारों ओर बैठे देख धृतराष्ट्र को लगा कि वे पुनः हस्तिनापुर में ही आ गये हैं। आश्रम के सभी मुनि पांडवों को देखने आये।

संजय ने मुनियों को पांडवों का परिचय कराया। उन सब के चले जाने पर युधिष्ठिर ने धृतराष्ट्र से कुशल-प्रश्न पूछने के बाद कहा- ''विदुर दिखाई नहीं देते? वे कहाँ पर हैं?''

''विदुर अन्न-जल त्याग कर भयंकर तपस्या करते निर्बल हो गया है। ब्राह्मण बताते हैं कि वह दिगंबर हो वन में संचार करते जब तब दिखाई देता है।'' धृतराष्ट्र ने उत्तर दिया।

धृतराष्ट्र ये शब्द कह ही रहे थे, तभी दूर पर विदुर आश्रम की ओर लौटते दिखाई दिया। युधिष्ठिर अकेले विदुर की ओर चल पड़ा। विदुर दुर्गम जंगल के बीच कभी दिखाई देता और कभी अदृश्य हो जाता, इसे देख युधिष्ठिर चिल्लाकर दौड़ पड़ा-''विदुर ! मैं तुमसे ही मिलने आ रहा हूँ।''

युदिष्ठिर जंगल के बीच एक शून्य प्रदेश में खड़ा हो गया। ''मैं युधिष्ठिर हूँ।'' ये शब्द कहते वह विदुर के सामने खड़ा हो गया। विदुर इस प्रकार दुर्बल हो गया था। विदुर निर्निमिष युधिष्ठिर की ओर देखने लगा।

युधिष्ठिर के मन में ऐसी अनुभूति हुई कि विदुर के अवयव उसके अवयवों के साथ मिलते जा रहे हैं और विदुर के प्राण अपने प्राणों में ऐक्य हो रहे हैं। इसके थोड़ी देर बाद विदुर का शव एक वृक्ष से सटे युधिष्ठिर को दिखाई दिया। युधिष्ठिर ने विदुर के कलेवर का दहन-संस्कार करना चाहा, परन्तु यतियों के लिए दहन संस्कार धर्म विरुद्ध था।

इसलिए अपने इस प्रयत्न को त्याग युधिष्ठिर आश्रम को लौट आया। सारी बातें सबको सुनाई। सब लोग आश्चर्य में आ गये।

**क्रमशः**

# समाचार झलक

## इतना बड़ा... इतना विशाल !

जापान के एक फोटोग्राफर मुनेनोरी इकेगामी को ज्यादा अंग्रेज़ी नहीं आती है, फिर भी उसने कुम्भ मेला के लिए अलाहाबाद में करोड़ों लोगों की भीड़ को देखकर अपना आश्चर्य प्रकट करने का प्रयास किया। उसने कहा जापान का महान पर्व ज़ियाँन माटुरी कुम्भ के समक्ष कुछ भी नहीं है, और न ही दक्षिणी अफ्रीका का सहस्राब्दी उत्सव और न ही आस्ट्रेलिया का आदिवासी उत्सव। इन दोनों उत्सवों की फिल्में उसने अपनी कम्पनी के लिए बनाई थी।

उसे आशा थी कि उसकी कम्पनी कुम्भ मेला की फिल्म बनाने के लिए उससे कहेगी। परन्तु ऐसा नहीं हुआ और दुःखी होकर उसने अपनी नौकरी से त्याग-पत्र दे दिया, और भारत चला आया। अब अपने शहर वापस जाने के बाद वह नौकरी ढूँढ़ रहा है और कुम्भ मेला की बनाई गई फिल्म बेचना चाह रहा है। चाहे वह उसमें सफल हो या न हो उसने एक बात का निश्चय कर लिया है कि वह अगले कुम्भ के लिए वर्ष २०१३ में भारत पुनः आएगा।

## उसे कितना लगाव है !

के. व्हाई वाँग बैंकाक के एक कम्पनी प्रशासक हैं, जो अपने बेटे के वायलिन बजाने से काफी प्रसन्न हुए। वह बच्चा इटली में बना २०० सालों पुराना लारेन्जी एटोरिओनी वायलन बजाना चाहता था। ''यह कोई समस्या नहीं है,'' उसने बेटे से कहा।

के. व्हाई वांग ने सिंगापुर के अपने घर को चुपके से ३६४,००० डालर में बेच दिया और अपने बेटे के लिए वह वायलिन खरीद लिया।

आपको यह कैसा लगा?
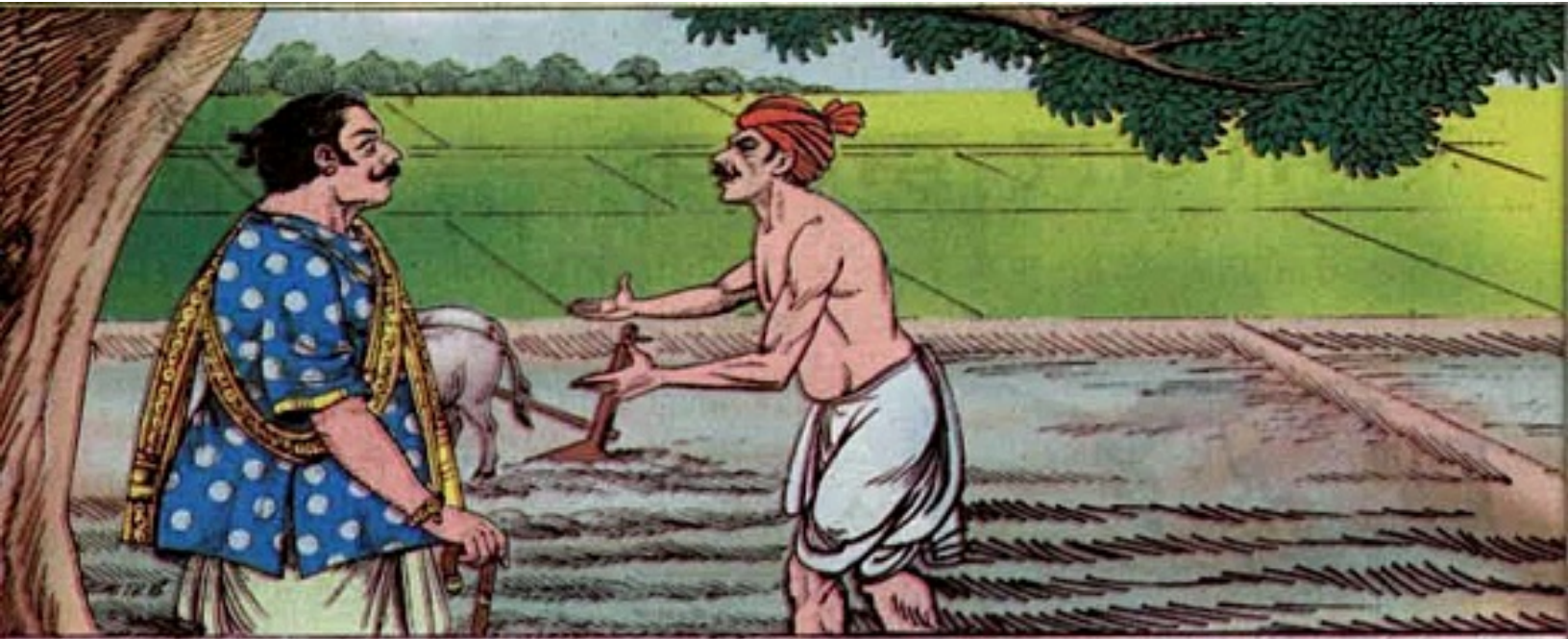
# चंचल चित्त

एक किसान अपने खेत में जाकर हल जोत रहा था, तब हल का फाल किसी चीज़ से जा टकराया। किसान ने उस जगह खोद कर देखा तो उसे एक कांसे का बर्तन दिखाई दिया। बर्तन में सोना भरा हुआ था।

बर्तन भर सोना देखते ही किसान का चित्त चंचल हो उठा। वह सोचने लगा- सोने से बड़े-बड़े काम किये जा सकते हैं। बड़ा आदमी बना जा सकता है। मगर साथ ही उससे ख़तरा भी है। चोरों को मालूम हो जाय तो लूट ले जायेंगे, सामना करने पर मार भी डालेंगे!

ऐसे परस्पर बिरोधी विचारों से किसान परेशान था। तभी कुछ दूरी पर एक न्यायाधिकारी उसे दिखाई पड़ा। किसान ने सोचा कि यह सारा सोना न्यायाधिकारी के हाथ दे तो उसे किसी प्रकार का ख़तरा न होगा। यह सोचकर वह किसान न्यायाधिकारी के पास दौड़कर गया और बोला-''आप कृपया एक बार मेरे खेत में आने का कष्ट कीजिये।''

दोनों उस जगह पहुँचे, जहाँ कि कांसे का बर्तन जमीन में था। इतने में किसान का मन बदल गया। उसने उस बर्तन पर मिट्टी डाल दी और न्यायाधिकारी से कहा-''महाशय, आप निर्णय करने में बड़े ही कुशल हैं। कृपया बताइये कि मेरे दोनों बैलों में से कौनसा बैल श्रेष्ठ है?''

यह सवाल सुनकर न्यायाधिकारी खीझ उठा और अपने रास्ते चला गया।

''मैंने यह सोना न्यायाधिकारी के हाथ क्यों नहीं दिया। इसे मैं सब की आँख बचाकर कहाँ छिपा सकता हूँ?'' किसान यह सोचकर मन ही मन और डरने लगा।

दिन भर वह यही सोचता रह गया। खेत का काम थोड़ा-सा भी न हुआ।

सूरज डूबने को था। तब न्यायाधिकारी गाँव लौटते दिखाई दिया। किसान की जान में जान आ गयी। वह फिर न्यायाधिकारी के पास दौड़

२५ वर्ष पहले चंदामामा में प्रकाशित पुरानी कथा

क़र गया। एक बार और अपने खेत में आने की मिन्नत की। न्यायाधिकारी ने सोचा कि कोई अनहोनी हो गयी है। यह सोचकर वह किसान के साथ खेत में पहुँचा। इतने में किसान का मन बदल गया। उसने न्यायाधिकारी से कहा-''यह बताइये कि मैंने कल जो खेत जोता था, वह अच्छा है या आज जोता गया अच्छा है?''

न्यायाधिकारी यह सवाल सुनकर यह सोचते अपने रास्ते चला गया कि किसान का दिमाग ख़राब है। न्यायाधिकारी के चले जाने पर किसान फिर सोचने लगा कि मैंने यह सारा सोना उसके हाथ में क्यों नहीं दिया? इसे मैं कहाँ छिपाऊँ? कैसे छिपाऊँ?'' वह चिंतित हो उठा।

आख़िर उसने एक बोरे में सोनेवाला बर्तन डाल दिया और पीठ पर लाद कर घर चला गया।

घर पहुँचते ही किसान ने अपनी पत्नी से कहा-''सुनो तो, बैलों को बांधकर दाना-पानी दो। मुझे जल्दी न्यायाधिकारी के घर हो आना है।''

अपने पति को पीठ पर से बोरे को न उतारते देख, किसान की पत्नी ने सोचा कि इसमें कोई रहस्य है। उसने इस रहस्य को जानने का मन में निश्चय कर लिया।

उसने किसान से कहा-''मेरा काम यह थोड़े ही है? तुम ही बैलों को बांध दो, मैं गाय और भेड़ों को संभालती हूँ। इसके बाद चाहे तुम जहाँ भी चले जाओ और जब मन होगा तब लौट आओ।''

किसान ने लाचार होकर बोरा नीचे रख दिया और बैलों को बांधने चला गया। इस बीच किसान की पत्नी ने बोरे में से कांसे का बर्तन बाहर निकाला। वह सोना से भरा था। किसान तब तक बैलों को बांध कर उन्हें चारा-पानी देकर लौटा। तब तक उसकी पत्नी ने उस बर्तन को कहीं छिपा दिया और उसी आकार का एक भारी पत्थर बोरे में रख दिया।

किसान अपना काम करके लौटा। बोरे को पीठ पर लाद कर सीधे न्यायाधिकारी के घर पहुँचा।

''साहब ! मैं आपके लिए एक पुरस्कार लाया हूँ।'' किसान ने कहा।

न्यायाधिकारी ने सोचा कि पुरस्कार बड़ा क़ीमती होगा। यह सोचकर बोरा खोलकर देखा तो उसमें एक पत्थर दिखाई दिया। इस पर न्यायाधिकारी के साथ किसान भी आश्चर्य में आ गया।

न्यायाधिकारी ने सोचा कि किसान के इस

व्यवहार का कोई प्रबल कारण होगा। उसने किसान को एक कोठरी में बंद कराया। उसने अपने दो नौकरों को आदेश दिया कि रात को किसान क्या-क्या बड़बड़ाता है और क्या-क्या करता है, इस पर निगरानी रखे।

किसान कोठी में बैठे मन ही मन बड़बड़ाते अपने हाथों से अभिनय करते कह रहा था-''ओह, इतना बड़ा बर्तन, इतना ऊँचा ! उसमें इतना सोना।''

नौकरों ने न्यायाधिकारी को किसान के अभिनय का परिचय दिया। किसान को बुलवाकर न्यायाधिकारी ने उससे पूछा-''भाई, देखो, तुम रात को अपने हाथों से कुछ माप रहे थे ! वह क्या है?''

इतने में किसान ने हिम्मत बटोर ली। उसने न्यायाधिकारी से कहा-''साहब, मैं आप ही की माप माप रहा था।'' ''साहब, यह कह रहा था कि आपका सर इतना मोटा है, आपकी गर्दन इतनी मोटी है। आपका पेट इतना ऊँचा है।''

न्यायाधिकारी को किसान की बातों पर बड़ा क्रोध आया। उसने अपने सेवकों को आदेश दिया-''इस बेहूदे को तुरंत फाँसी के तख्ते पर चढ़ा दो।''

नौकर किसान को ले गये। फाँसी के खम्भे का प्रबंध किया। उस पर रस्सा लगाया और गले में फाँसी का फँदा डालने ही वाले थे, तब किसान ने कहा-''ठहर जाओ, न्यायाधिकारी से मुझे एक निवेदन करना है।''

नौकरों ने किसान को न्यायाधिकारी के पास ले जाकर उसकी अंतिम इच्छा बतायी।

''तुम मुझसे क्या कहना चाहते हो?'' न्यायाधिकारी ने किसान से पूछा।

''देखो साहब, आपके नौकर मेरे गले में फाँसी का फँदा डालते तो कसकर मेरी साँस नहीं चलती, बंद हो जाती।'' किसान ने कहा।

किसान की बात सुनकर न्यायाधिकारी हँसते-हँसते लोट-पोट हो गया और बोला-''इस कमबख्त को छोड़ दो।''

फिर क्या था, किसान अपने घर गया। उस सोने की वजह से पत्नी के साथ आराम से अपने दिन काटने लगा।
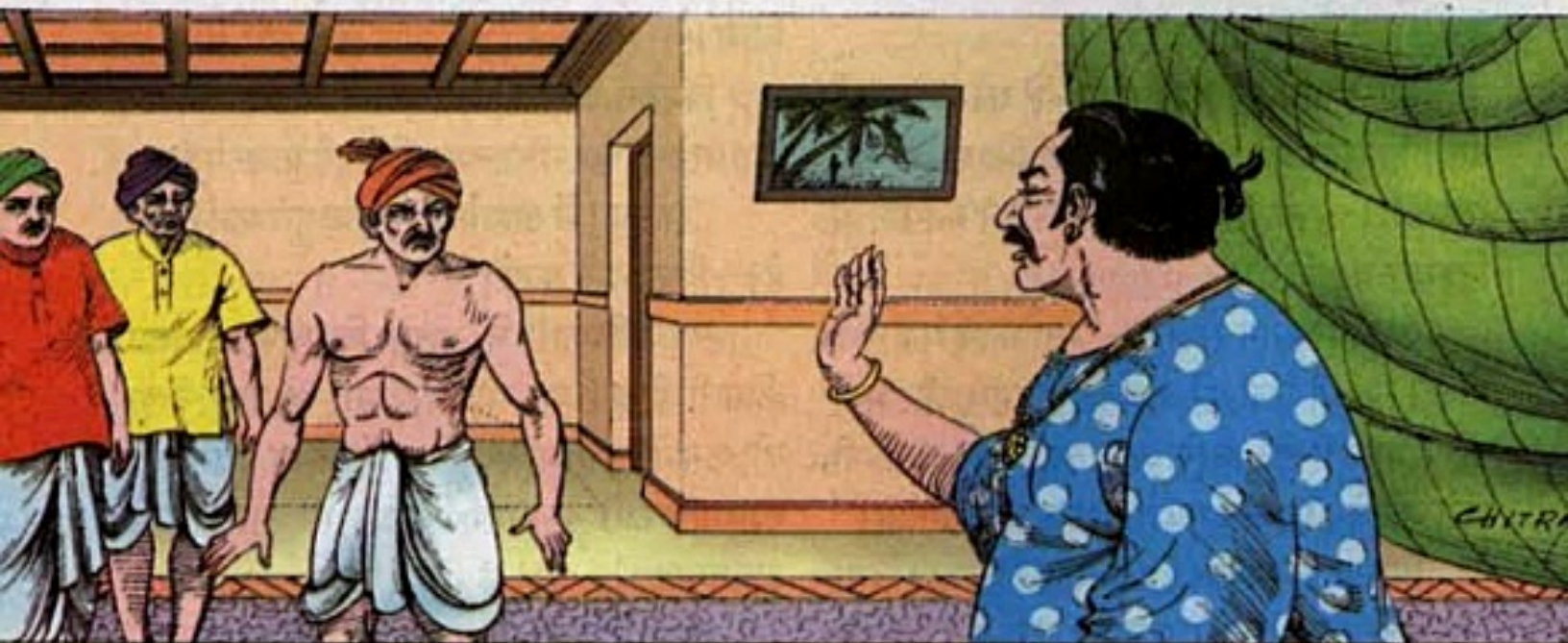
# परीक्षा का भय कैसे दूर करें

"अगले महीने से तुम्हारी आखिरी परीक्षाएँ आरम्भ होगीं" श्रीमती लता शंकर ने कहा, अपनी पढाई ध्यानपूर्वक करना मत भूलो।"

कक्षा में शांति। अचानक जिन्दगी एकदम गम्भीर और चौकन्नी हो गयी। मीरा के हाथों में पसीना होने लगा, उसका दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़कने लगा, वह रूआँसी हो गयी। वह परीक्षा, किताब कठिन विषयों, इन सबसे दूर भाग जाना चाहती थी।

मीरा को परीक्षा पसंद नहीं थी। उससे वह अपने को बिमार समझने लगी। वह प्रोजेक्ट बनाने और निबन्ध लिखने में कभी पीछे नहीं हटती परन्तु लिखित परीक्षा से वह परेशान हो जाती। उसके पेट में कुछ होने लगता और बिमार महसूस करती। वह जो कुछ भी पढती वह सब भूल जाता।

परीक्षा के दिनों में उसे कक्षा बड़ी डरावनी लगती। उसके सभी मित्र परेशान और उदास लगते। अध्यापक लोंग काम के चलते बच्चों से काफी दूर-दूर रहते। कोई मुस्कुराता भी नहीं। और जब मीरा को प्रश्न-पत्र मिलता, वह ठंडी पड़ जाती।
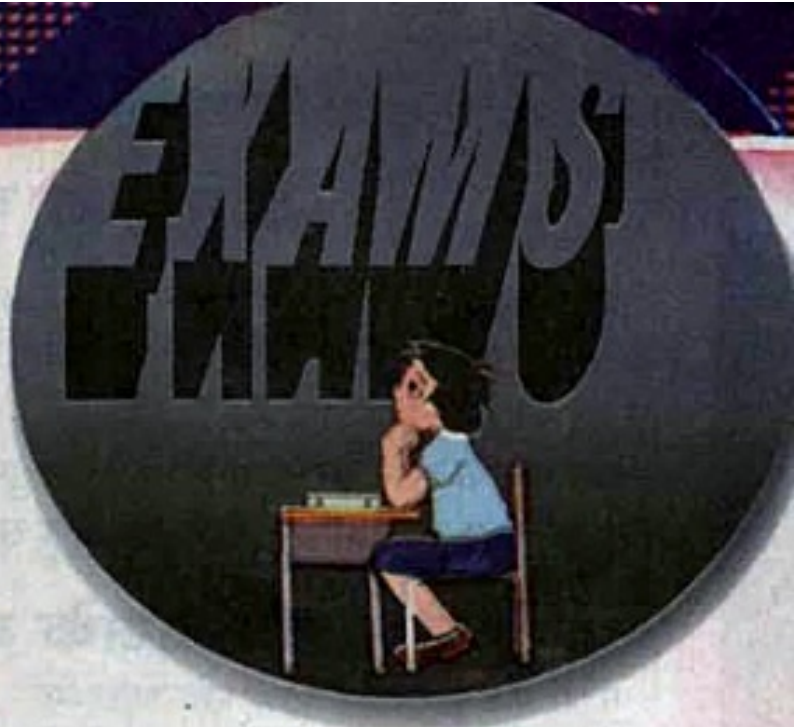
बड़ी मुश्किल से उस पर लिखा हुआ पढ़ पाती। वह परीक्षा की अच्छी तैयारी भी करती, फिर भी उसे लगता कि वह उतना अच्छा नहीं कर पा रही जितना उसे करना चाहिए।

जब परीक्षा की तारीख बताई जाती है, तो आप कैसा महसूस करते हैं? क्या आप मीरा की तरह डर महसूस करते हैं? क्या आप सोचते हैं कि परीक्षा नहीं देनी चाहिए? और कोई परीक्षा नहीं होनी चाहिए ?

## दृढ़ संकल्प के लिए

१. मैं सही हूँ तो मैं हार नहीं मानूँगा।
२. यदि मैं आखिरी क्षण तक संघर्ष करता रहूँ तो मुझे विश्वास है कि सबकुछ ठीक होगा।
३. समस्या के समय मैं निडर और उत्साहित रहूँगा।
४. मेरे लक्ष्य के रास्ते में मैं किसी को बाधा नहीं डालने दूँगा।
५. मैं सभी शरीरिक विकलांगता और बाधाओं से संघर्ष करूँगा।
६. मैं अपने लक्ष्य की पूर्ति के लिए बार-बार प्रयास करता रहूँगा।
७. सभी सफल महिलाओं और पुरुषों ने मृत्यु और अभाग्य के साथ संघर्ष किया है। मैं इसकी नवीन क्रांति को मानता हूँ।
८. मैं हतोत्साह के समक्ष कभी सिर नहीं झुकाऊँगा या उस निराशा को जो मेरे सामने समस्या बनकर खड़ी हो जाए।

- हेरमैन शेरमैन

# इम्तिहान का बुखार

आप कब डर महसूस करते हैं? जब आपके आस-पास वाले डरे हों, आप स्वतः डर जाते हैं। बच्चों के दोस्त परीक्षा से डरे होते हैं तो यह डर का एक कारण बन जाता है। यह डर खाँसी-जुकाम और फ्लू की तरह फैल जाता है।

इम्तिहान के बुखार का दूसरा कारण है कि तुम यह महसूस करते हो कि तुमने अपने पाठ को ढंग से नहीं पढ़ा और प्रश्नों के उत्तर नहीं लिख सकते हो। लेकिन डरने का कोई कारण नहीं है।

## महेश और उसके कामों का पहाड़ !

महेश को बृहस्पतिवार को पता चला कि अगले सोमवार को उसका गणित का टैस्ट है। और उस विषय को लोग दो सप्ताह से पढ़ रहे हैं। उसने कुछ सवाल कर लिए परन्तु बहुत सारे उसे नहीं आते थे। वह टी.वी. देखते-देखते अपना होमवर्क करता और जब वह जाँच कर वापस आता तो उसे देखता भी नहीं। एक बार उसने अपने दोस्त से नकल करके भी होमवर्क किया।

रविवार की शाम को उसने पढ़ने का निश्चय किया। उसने सोचा कि वह एक ही बार में सारे सवाल कर लेगा परन्तु जब वह पढ़ाई करने बैठा तो वहाँ सवालों का पहाड़ था। उसने देखा कि सवाल सरल नहीं थे और उसमें से तीसरा हिस्सा करने के लिए उसे पूरी शाम लग गयी। उसने सोचा वह जितना कर पायेगा करेगा लेकिन आते हुए सवाल भी वह नहीं कर पाया क्योंकि उसे नींद आ रही थी। बाद में पता चला कि कुछ सवाल बिल्कुल नहीं वह कर पाया। उसकी माँ ने उसे सोने के लिए भेज दिया क्योंकि अगली सुबह वह स्कूल जाने के लिए उठ नहीं पाता। दूसरे दिन वह इस बात को लेकर परेशान था कि वह परीक्षा में अधिक सवाल नहीं हल कर पाया। उसने निर्णय लिया कि अंतिम परीक्षाओं के लिए वह अच्छी पढ़ाई करेगा और आगे से इस प्रकार की समस्या में नहीं पड़ेगा।

यदि आप आखिरी क्षण पढ़ने बैठेंगे तो आपको पता चलेगा कि जो भी आपको पढ़ना है वह सब कुछ न आप पढ़ सकते हैं न ही समझ सकते हैं। परेशानी में आप सब कुछ भूल जाएँगे। ईस प्रकार परीक्षा में कठिनाई होगी और आखिरी क्षणों में पढ़ा गया काम नहीं आयेगा। परीक्षाओं में अच्छा लिखने के लिए नियमित रूप से पढ़ना आवश्यक है।

# आपको सहयोग करने के लिए कुछ नुस्खे

## पूरे वर्ष में

- कक्षा में ध्यान दो।
- अपने नोट्स और क्लास वर्क नियमित रखो।
- अपने सभी काम करो।

फिर परीक्षा से पहले आपको मात्र अपने नोट्स, किताबों और वर्कशीट में दिए गए प्रश्नों को दुहराने तथा पाठों की संक्षिप्त समरी पढ़ने की आवश्यकता होगी। फिर तुम्हें पता चलेगा कि तुम सभी प्रश्नों को अच्छी तरह जानते हो और हल कर सकते हो।

## आखिरी परीक्षाओं से पहले

- एक महीने पहले दुहराना आरम्भ कर दो।
- एक योजना बनाओ प्लैनर का प्रयोग करो।
- प्लैनट में सभी के लिए समय लिखो।
- सभी विषयों को एक बार दुहराओ।

## कैसे दुहराएं

- सारे नोट्स एक बार पूरा पढ़ो।
- आपको पता होना चाहिए कि आपको सिद्धांत समझ में आ गए हैं।
- मुख्य विषय को संक्षिप्त में लिखो।
- प्रश्न-पत्र का एक सामान्य नमूना ले लो।
- अभ्यास करते रहो।
- याद ही मत करो उत्तर को लिखो भी।

उसके बाद परीक्षा के एक दिन पहले अपने सारे नोट्स ध्यान पूर्वक पढ़ो और दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखने की कोशिश करो। इस प्रकार उत्तर आपके हाथों को भी याद हो जाएगा और आपके दिमाग को परेशानी नहीं होगी।

## परीक्षा से पहले की रात

- आखिरी समय में मत पढ़ो।
- संक्षिप्त नोट्स पढ़ो।
- रात को अच्छा खाना खाओ और आराम करो।
- जल्दी सो जाओ।

इस समय में नए विषय को नहीं पढ़ना चाहिए। इस समय तक जो पढ़ लिया, पढ़ लिया। जल्दीबाजी आपको भ्रमित करेगी और डरायेगी। अच्छा यही होगा कि आराम करो और अच्छी नींद लो।

## परीक्षा में

- शांत रहो।
- सारे प्रश्नों और चेतावनियों को ध्यानपूर्वक पढ़ो।
- एक प्रश्न को कितना समय देना चाहते हो, उसे पहले निर्धारित करो। थोड़ा समय दुहराने के लिए रखो।
- उन सभी प्रश्नों का उत्तर पहले दो जो तुम्हें आते हैं।
- जो प्रश्न नहीं आते उन्हें शांति से दो बार पढ़ो, फिर उस पाठ और शीर्षक के बारे में सोचो, जहाँ से ये लिए गए। उत्तर स्वतः आ जायेगा।
- एक ही प्रश्न पर ज्यादा समय मत दो।
- अपने उत्तर को सावधानीपूर्वक देखो। अगर तुम्हारे पास समय है तो व्याकरण और शब्दों को ठीक करो।

## याद रखने की बातें

- सफलता का मूल्य है कठिन परिश्रम। हमें परिश्रम करना चाहिए। मुझे लगता है आप वह सब प्राप्त कर सकते हैं, यदि आप उसका मूल्य देने के लिए तैयार हों। - विंस लोम्बारदी
- क्षमता वही है जिसे आप करने में सक्षम हों। उद्देश्य का दृढ़संकल्प वही है जो आप करते हैं। व्यवहार कुशलता वह है कि आप कितना अच्छा करते हैं। - *ल्यू हॉल्ज*
- धीरे-धीरे हमेशा और अच्छा करने का प्रयास ही आपको विलक्षण बनाता है।
- सफलता कुछ छोटे-छोटे प्रयासों से मिलती है, चाहे वह एक दिन में हो या उससे ज्यादा।

  - *रॉबर्ट क्वालियर*

चंदामामा प्रस्तुति
अजेय गरूड़ा
चित्र : फानि
चन्द्रपुरी के महाराजा महेन्द्रदेव ने स्वर्गीय प्रधानमंत्री के बेटे आदित्य को दरबार का अधिकारी बनाया। उसने उन सभी डाकुओं का सफाया कर दिया जो लोगों को परेशान करते थे। प्रधानमंत्री के मित्र की बेटी अरुणा ने यह राज बताया कि कैसे उसके और आदित्य के पिता एक ही रात को मृत्यु को प्राप्त हो गए। उसने एक डिब्बा आदित्य को दिया। आदित्य को उसमें एक झलक मिली जिसमें उसने अपने पिता की लिखावट ली।
विनाता ने अपने पुत्र गरूड़ा को बताया कि किस प्रकार वह कदरु के साथ एक शर्त हार गयी और उसने अपनी और अपने पुत्र नागों की सेवा करने के लिए बाध्य कर दिया। गरुड़ा ने कदरु से उसे और अपनी माँ को स्वतंत्र करने के लिए प्रार्थना की।
यदि तुम देवलोक जाकर मेरे लिए अमृत लेकर आते हो तो तुम्हें और तुम्हारी माँ को हमारी सेवा नहीं करनी पड़ेगी।
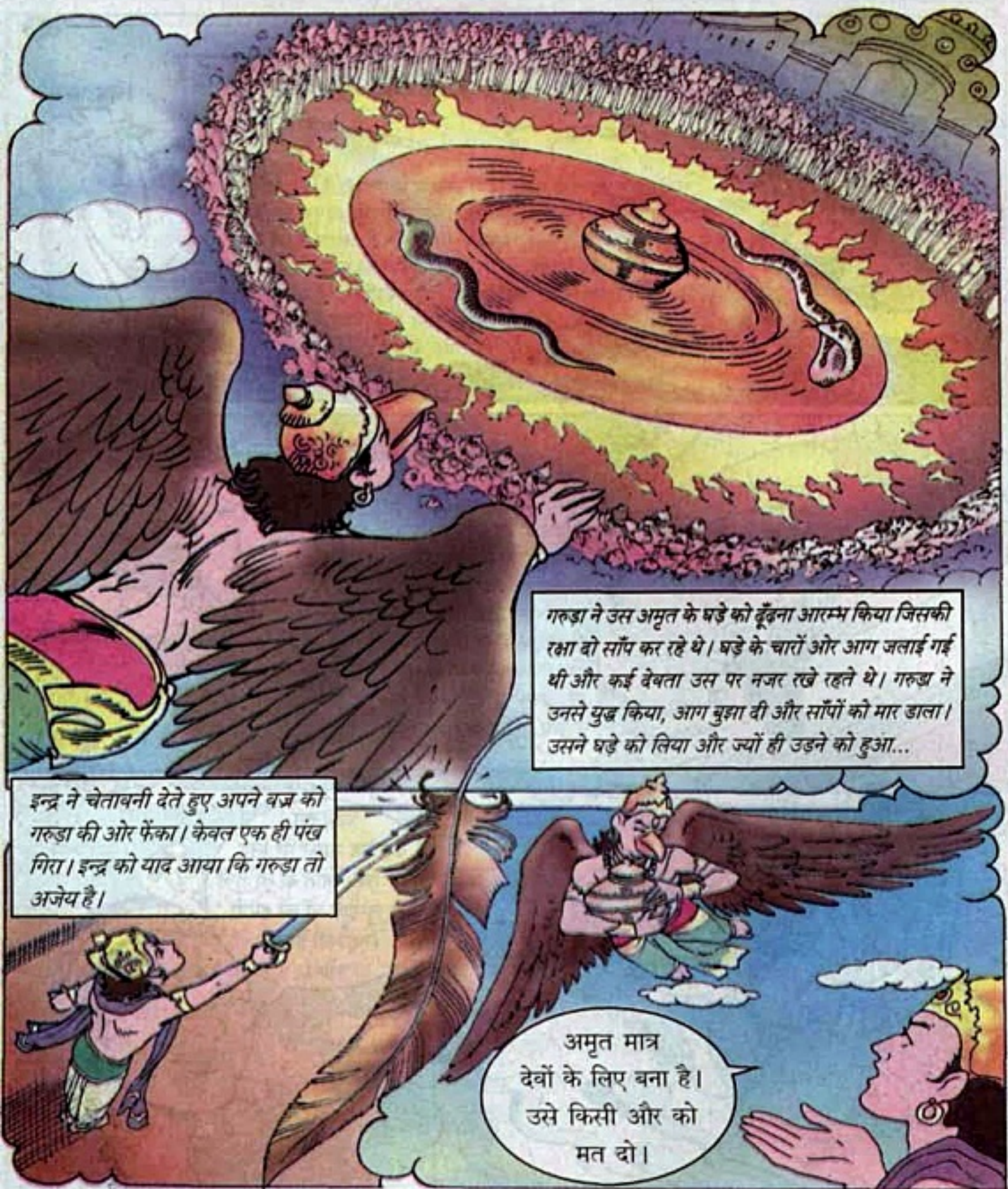
गरुड़ा ने उस अमृत के घड़े को ढूँढ़ना आरम्भ किया जिसकी रक्षा दो साँप कर रहे थे। घड़े के चारों ओर आग जलाई गई थी और कई देवता उस पर नजर रखे रहते थे। गरुड़ा ने उनसे युद्ध किया, आग बुझा दी और साँपों को मार डाला। उसने घड़े को लिया और ज्यों ही उड़ने को हुआ...
इन्द्र ने चेतावनी देते हुए अपने वज्र को गरुड़ा की ओर फेंका। केवल एक ही पंख गिरा। इन्द्र को याद आया कि गरुड़ा तो अजेय है।
अमृत मात्र देवों के लिए बना है। उसे किसी और को मत दो।

यह मुझे मेरी सौतेली माँ के लिए चाहिए। तभी वह मुझे और मेरी माँ को मुक्त करेगी।
लेकिन मैं उसे पीने नहीं दूँगा। मैं अमृत पूर्ण यह कुम्भ देवलोक को लौटा दूँगा।
अमृत से भरे घड़े को देखकर कदरु खुश हो गई। गरुड़ा और उसकी माँ अब कदरु और उसके पुत्र नागो के लिए और काम नहीं करेंगे। ज्यों ही नाग घड़े के निकट गए, गरुड़ा एक बार फिर उसे उठाकर उड़ गया।

गरुड़ा का जो एक पंख हिमालय में गिर गया था। उसे एक मुनि ने रख लिया था। वे उसकी पूजा करते रहे और फिर पंख को हमारे एक पूर्वज को दे दिया। वे सभी राजा थे। उन लोगों ने लगातार पंख की पूजा की और अभी भी पूजा चलती आ रही है। ऐसा कहा गया है कि जब छठवीं पीढ़ी का व्यक्ति इसकी पूजा करेगा तो वह सबसे अधिक सुखी रहेगा। आदित्य तुम्ही छठवीं पीढ़ी के युवक हो।
मेरे बाद तुम इस पंख की परम्परा को सम्भालना। प्रत्येक पूर्णिमा को इसकी पूजा करना। यह तुम्हें अधिक शक्ति और अधिक बल प्रदान करेगा। जिसका उपयोग तुम लोगों की भलाई के लिए करना। जिस प्रकार गरुड़ा ने अपनी माँ की मुक्ति के लिए संघर्ष किया, उसी प्रकार तुम अपनी माँ चन्द्रपुरी की अराजकता से बचाना। गोपनीय तरीके से मेरे ऊपर नजर रखी जा रही है। हो सकता है मेरा अंत नजदीक हो। गरुड़ा तुम्हारी रक्षा करे। आदित्य मेरे पुत्र।
पिताजी, मैं अपनी मातृभूमि की रक्षा करूँगा।
क्रमशः

**Statement about Ownership of CHANDAMAMA (Hindi)**
Rule 8 (formVI), Newspaper (Central) Rules, 1956

| | |
|---|---|
| 1. Place of Publication | 82 Defence Officers Colony<br>Ekkatuthangal<br>Chennai-600 097 |
| 2. Periodicity of Publication | MONTHLY<br>1st of each calendar month |
| 3. Printer's Name<br>Nationality<br>Address | B. VISWANATHA REDDI<br>INDIAN<br>82 Defence Officers Colony<br>Ekkatuthangal<br>Chennai-600 097. |
| 4. Publisher's Name<br>Nationality<br>Address | B. VISWANATHA REDDI<br>INDIAN<br>82 Defence Officers Colony<br>Ekkatuthangal<br>Chennai-600 097 |
| 5. Editor's Name<br>Nationality<br>Address | B. VISWANATHA REDDI (Viswam)<br>INDIAN<br>82 Defence Officers Colony<br>Ekkatuthangal<br>Chennai-600 097 |
| 6. Name and Address of individuals who own the paper | Chandamama India Ltd.<br>Board of Directors:<br>1. Vinod Sethi<br>2. B. Viswanatha Reddi<br>3. P. Sudhir Rao<br>82 Defence Officers Colony<br>Ekkatuthangal<br>Chennai-600 097 |

*I,* **B. Viswanatha Reddi,** *do hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.*

1st March 2001

B. VISWANATHA REDDI
*Publisher*

# चित्र कैप्शन प्रतियोगिता

**क्या तुम कुछ शब्दों में ऐसा चित्र परिचय बना सकते हो, जो एक दूसरे से संबंधित चित्रों के अनुकूल हो?**

तुम एक सामान्य पोस्टकार्ड पर इसे लिख कर इस पते पर भेज सकते हो :
*चित्र परिचय प्रतियोगिता, चन्दामामा,*
प्लाट नं. ८२ (पु.न. ९२), डिफेन्स आफिसर्स कालोनी, इकाडुथांगल, चेन्नई -६०० ०९७.
जो हमारे पास इस माह की २० तारीख तक पहुँच जाए । सर्वश्रेष्ठ चित्र परिचय पर १००/-रुपये का पुरस्कार दिया जाएगा, जिसका प्रकाशन अगले अंक के बाद के अंक में किया जाएगा ।

## बधाइयाँ

फरवरी अंक के पुरस्कार विजेता हैं :
रश्मि मिश्रा,
E ३१+३२, मंगी किशोर पार्क,
भोसले नगर के पास, पूणे,
महाराष्ट्र - ४११ ००७.

खुशियों के रंग हैं न्यारे
हम खुशबू बेचते हैं प्यारे

For more Pranky fun visit: www.gogokid.com

Mudra:RASNA:360 Hin.